अध्याय–प्रथम

नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय–1

नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आधुनिक हिन्दी महिला साहित्यकारों में प्रमुख स्थान रखने वाली नासिरा शर्मा वर्तमान समस्याएँ भावबोध, परिवेशगत अनुभूति, संवेदना और पतन होती जा रही मानवता आदि को लेकर साहित्य सृजन कर रही हैं। उन्हें नारीमन की संवेदना और उसके मनोविज्ञान की प्रवक्ता के रूप में जाना जाता है। एक नारी होने के नाते उनकी रचनाओं में प्रमुख रूप से नारी जीवन एवं उनकी समस्याओं का चित्रण हुआ है। समाज और साहित्योत्थान का व्रत लेकर नासिरा शर्मा आज तक कार्यरत रही हैं, लेकिन उनका साहित्य समीक्षकों की दृष्टि से उपेक्षित हो रहा है।

नासिरा शर्मा एक प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं, जिन्होंने हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति का अनुशीलन किया तथा वर्तमान स्वरूप के विभिन्न समय सरोकार और परिदृश्य को रेखांकित किया है। अपनी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से समाज को चैतन्य किया है।

अस्सी के दशक में तेजी से उभरने वाले साहित्यकारों में नासिरा शर्मा का नाम प्रमुख है। ईरान तथा अफगानिस्तान के विषय में उनके पास विशद जानकारियाँ थीं। वहाँ की महिलाओं और भारतीय महिलाओं तथा उन देशों और भारत के राजनीतिक परिदृश्य की भी उन्हें गहरी पहचान और समझ थी। नासिरा शर्मा के सामने एक ओर तो ईरान, अफगानिस्तान के इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, राजनीतिक परिदृश्य और इन सबके बीच आम जन द्वारा भुगतने और सामना की जाने वाली तकलीफें थीं, जिन्हें उन्होंने अपने लेखन का हिस्सा बनाया तो दूसरी ओर उनके पास इलाहाबाद और दिल्ली के अनुभव थे, जो धीरे–धीरे छनते हुए उनकी विभिन्न कहानियों और औपन्यासिक कृतियों में लक्षित होने लगे। उनकी दृष्टि प्रगतिशील सोच से प्रेरित रही लेकिन मानवीय सम्बन्धों की जटिलता को नासिरा शर्मा ने वैचारिक दबाव के बजाय मानवीय स्तर पर समझा और उसे रेखांकित किया।

नासिरा शर्मा के रचना–संसार का फलक बड़ा ही विस्तृत है। ''उपन्यास,

कहानी, नाटक, अनुवाद, लेख–संग्रह, रिपोर्ताज, पत्रकारिता, टी.वी. फिल्म, बाल–साहित्य संवाद– ''लेखन एवं साक्षात्कार आदि लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी द्वारा अपने विचारों को प्रकट किया है। किसी भी साहित्यकार के लेखन को जानने और समझने के लिए उस साहित्यकार के परिवेश और उसकी पृष्ठभूमि को जानना और परखना आवश्यक होता है। इसलिए इस अध्याय के अंतर्गत हमें नासिरा शर्मा के लेखन को जानने और समझने से पूर्व उनके व्यक्तित्व और कृत्तिव को जानना आवश्यक है।''[1]

हिन्दी साहित्यकार के सृजन का कारण केवल उसकी व्यक्तिगत प्रतिभा या संवेदना नहीं होती। उसमें उसके माता–पिता–पूर्वजों, उसकी रचनाभूमि, उसके शिक्षकों, अंतरंगों का भी योगदान होता है। नासिरा शर्मा सातवें दशक में हिंदी साहित्य में प्रवेश किया और अब तक लेखन कार्य जारी है। नासिरा जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि उनका लालन–पालन, उनकी शिक्षा, उनके संस्कारों का प्रभाव निश्चित ही उनके साहित्य पर पड़ा है।

नासिरा शर्मा के नाम के संबंध में अशोक तिवारी जी कहते हैं–''नासिरा भी और शर्मा भी। वाह! बिल्कुल नया नाम–एक ऐसा नाम, जिसमें एक ओर जहाँ चार सौ साल पुरानी दीने–इलाही–धर्म की महक आती थी, वहीं दूसरी ओर प्रगतिशील सोच की एक निंदा तस्वीर सामने कौंध आती थी।''[2]

शंकरदयाल सिंह कहते हैं–''वैसे, कह दूं कि यह नाम मुझे जहां कहीं दिखा, त्याग–सा लगा–नासिरा शर्मा। हिंदू–मुसलमान का योग। यानी, राष्ट्रीय एकता का माहौल। गंगा जमुना का मिलन। मंगू–मोती की टकाई।''[3]

1. व्यक्तित्व

मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण उसके कर्मों द्वारा ही होता है। यही कर्म उसके जीवन को नई दिशा भी देते है। व्यक्तित्व जिसको अंग्रेजी में पर्सनाल्टी कहते है। किसी व्यक्ति के व्यवहार आचार–विचार द्वारा तय किया जाता है। व्यक्ति

---

[1] फातिमा शेख अफरोज, नासिरा शर्मा का कथा साहित्य वर्तमान समय के सरोकार, अतुल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2012, पृ.185

[2] नासिरा शर्मा : एक मूल्यांकन, सं.–फीरोज अहमद, पृ. 62

[3] अग्निपथ की राही नासिरा शर्मा, सं.–सुदेरश बत्रा, पृ. 40

का अर्थ है व्यक्त या प्रकट होना। इस तरह व्यक्ति के व्यक्त होने की क्रिया से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। किंतु उसके व्यक्तित्व का प्रभाव समाज पर अवश्य पढ़ता है। लेखकों के लिए यह कहा जायेगा कि उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उसके लेखन पर भी पड़ता है। पीयूष गुलेरी की दृष्टि में ''व्यक्ति की बाह्य रचना व्यवहार की विशेषताओं, वृत्तियों, रूचियों, धारणाओं, शक्तियों, योग्यताओं और कुशलताओं का सर्वाधिक लाक्षणिक समायोजन ही व्यक्तित्व है।''[4]

व्यक्तित्व के विविध आयाम

बहिरंग व्यक्तित्व

व्यक्तित्व के प्रथम दर्शन में जो चित्र मन पर अंकित होता है, वह बहिरंग व्यक्तित्व होता है। नासिरा शर्मा गौर वर्ण सुदृढ़ शरीर से युक्त होने के कारण उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली दिखाई देता है। नासिरा जी के व्यक्तित्व के संबंध में गजाल जैगम जी कहते है कि ''उनके व्यक्तित्व में एक अजीब–सी चुंबकीय कशिश है, यह कशिश इलाहाबाद की मिट्टी में भी है, जिसे कोई नाम देना मुश्किल है लेकिन इस कशिश से बचना नामुमकिन है।''[5]

''जाने–माने प्रोफेसर जामिन अली की चहेती औलाद :'नासिरा' इलाहाबाद की बेटी.... 'नासिरा'। इलाहाबाद.... जहाँ आनंद भवन में सैकड़ों सुर्ख गुलाब महकते हैं। जहाँ का हर जर्रा आफताब है.... और साहित्य का एक आफताब नासिरा शर्मा भी.... जिनकी चमकीली शफ्फाक आँखें गंगा का गुमान देती हैं तो कभी जमुना का और सरस्वती तो वे है ही....।[6] उनके खूबसूरत आबशार जैसे बाल.... निसवानी हुस्न (स्त्री सौंदर्य) में चार चाँद लगाते हैं तो नर्म और भीगा हुआ लहजा एक अजब–सी गुताइयत (लयबद्ध) निश्छल और साफगोई स्वभाव उनकी विशेषता है। उनकी खूबसूरत जबान, शब्दों के उम्दा उच्चारण, सटीक एवं चयनित शब्दों से सजे वाक्य और बोलने का अंदाज मखमल सरीखा मुलायम व फर्रयुक्त उनके व्यक्तित्व की शालीनता व बौद्धिकता को ऊँचाई प्रदान करता है। मीरा सीकरी के शब्दों में

---

[4] फॉ. पीयूष गुलेरी : चन्द्रधर शर्मा गुलेरी : व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 125

[5] अग्निपथ की राही नासिरा शर्मा, सं.–सुदेरश बत्रा पृ. 45–46

[6] अग्निपथ की राही नासिरा शर्मा, सं.–सुदेरश बत्रा पृ. 46

''लेखिका की समझ बहुत अच्छी है, विजन बहुत साफ और दृष्टि बहुत पैनी है।

आपने बात शुरू की ही और आपसे बात करने से पहले ही वह रिक्त स्थान को पूरा कर देंगी और आप केवल हँस देंगे।''[7]

नासिरा सादगी की कायल है। दिखावे के इस जमाने में जहाँ आत्म–प्रदर्शन की होड़–सी लगी है वही नासिरा को इस बाहरी चमक–दमक से नफरत है। दिल्ली जैसे महानगर में बस जाने के बावजूद भी शहरी हवा उन्हें छू तक नहीं सकी है। सादगी और शिष्टता का अनूठा संगम उनके व्यक्तित्व में एक तेज पैदा करता है। शिष्ट तरीके से अपना विचार कुछ इस तरह से रखती है कि मन आस्था से भर उठता है। नासिरा शर्मा एक स्वाभिमानी स्त्री है, पर अहं से कोसों दूर।

''बच्चों से बहुत प्रेम है उन्हें। कहती हैं बच्चे मुझे काफी अच्छे लगते हैं।''[8]

अंतरंग व्यक्तित्व

आंतरिक व्यक्तित्व उस व्यक्ति की विचारधारा तथा उसके द्वारा सम्पन्न हो रहे क्रियाकलापों से, वार्तालाप से जाना जा सकता है। निडर व्यक्तित्व की धनी नासिरा अपनी बात को साहसिकता से कहती हैं तथापि उन्होंने स्वयं एक बार कहा था कि ''अदब ने जिंदगी में शराफत और इंसानियत के साथ–साथ बुजदिली भी पैदा कर दी है। इसे स्पष्ट करते हुए वे कहती हैं–मुझे अच्छी तरह याद है, क्योंकि आज भी मैं इस दर्द से गुजरती हूँ और अपने अंदर तड़प–तड़प कर रह जाती हूँ मगर बहादुरी का कदम नहीं उठा पाती हूँ जो अक्सर लोग प्रतिक्रिया के रूप में उठा लेते हैं। पर अपनी इस कमजोरी को पहली बार मैंने अगस्त 1996 में हुई एक दुर्घटना के बाद बहुत शिद्दत से महसूस किया कि मैं बदला लेने, किसी को नुकसान पहुँचाने और किसी को जलील करने की क्षमता कतई नहीं रखती हूँ और धैर्य के अथाह समंदर में, जिसका स्वाद नमकीन है। अक्सर मैं खारे पानी में डूबती–तैरती हूँ। मगर ये आँसू बेचारगी के नहीं, आक्रोश के होते हैं। जब कभी फैसला लेने की घड़ी आई तो हमेशा मेरी कोशिश रही है कि मैं बहादुरी की इस चमचमाती तलवार को म्यान में रख बुजदिली से कोई ऐसा कदम उठाऊँ जो उस

---

[7] मीरा सीकरी : नया ज्ञानोदय, अंक जून 2007 पृ. 63

[8] नासिरा शर्मा : डॉ. अमरीश सिन्हा, सं.–निजी वार्ता तिथि 20.12.2006

रास्ते को जाए जहाँ दरवाजे दूसरों के लिए खुले हों, बंद नहीं। यही मेरी ताकत है।

यही वजह है मेरे लेखन में या किरदारों में आपको यह 'बुजदिली' नहीं मिलती जिसका अर्थ भीरू, डरपोक होने से लगाया जाता है।''[9]

नासिरा का व्यक्तित्व पारदर्शी, उदार होने के नाते उनसे आत्मबल और दृढ़ता का संचार दिखाई देता है। उनके विचार, आचार और व्यवहार में खुलापन है जो उसके पारदर्शी व्यक्तित्व का ही परिणाम है उनका गंभीर व्यक्तित्व उनके चिंतन–मनन का द्योतक है। पत्रकारिता के माध्यम से समाज सेवा करना वह अपना कर्त्तव्य समझती है।

नासिरा समाज की ज्वलंत समस्या पर विचार–मंथन कर उस पर अपने विचार व्यक्त करती है। अमृतलाल नागर के अनुसार ''नासिरा में एक विद्रोही अंतः व्यक्तित्व है जो शायद जन्मजात है। वे विदुषी ही, ऊँची डिग्रीधारिणी, खूब पढ़ी–लिखी, खूब घूमी और खूब सोचने वाली महिला।''[10]

नासिरा शर्मा ने समाज में भारतीय परिवेश से इतर इतना कुछ देखा समझा है कि उससे जुदा नहीं हो पाई। ये सारे चिंतन–मनन और विश्लेषण उनकी कलम का सहारा पाकर कागज पर उतर पड़े। बिना किसी फर्क, भेदभाव के पूरी ईमानदारी से उन्होंने रचनाधर्मिता की है। वे कहती हैं–''मैं सीमा व रंगभेद को नहीं पहचानती, मेरे लिए इंसान होना काफी है। वह कहाँ का है और किस धर्म व भाषा का है। इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है। शायद इसी सोच के चलते मैं विदेशी धरती पर भारतीय किरदारों को नहीं ढूंढती रही हूँ, बल्कि जहाँ जिस जमीन पर जाने का मौका मिला वहीं के इंसानों के दुःख–दर्द को समझने की कोशिश की। इस मामले में मैं कोई खानाबंदी नहीं कर पाई।''[11]

ललित मंडोरा जी उनके स्वभाव के बारे में कहते है। ''उनके स्वभाव की गर्मी और नर्मी ने मुझे जहां प्रभावित किया, वहीं उनसे भय भी भागा और इच्छा हुई कि एक साक्षात्कार उनसे लूँ। दिल्ली लौटते हुए 'ट्रेन' में उनका साथ रहा। वह

---

[9] नासिरा शर्मा : डॉ. अमरीश सिन्हा, नया ज्ञानोदय अंक सितम्बर 2007 पृ. 63

[10] नासिरा शर्मा : शब्द और संवेदना की मनोभूमि, पृ. 348

[11] सिन्हा, डॉ0 अमरीश–बोगदे से बाहर, शिल्पायन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, संस्करण–2015 पृ. 63

इच्छा भी पूरी हुई। चलती ट्रेन की गति बैकग्राउण्ड म्यूजिक की तरह उनके जवाब और मेरे सवाल के संग मेरे छोटे से टेप रिकॉर्डर में टेप होती रही। मेरे बैग में बच्चों के खिलौने देख उन्होंने मेरे परिवार के बारे में पूछा और मुझे महसूस हुआ कि जो यात्रा लेखिका के आतंक से शुरू हुई थी, वह एक इंसानी मिठास पर खत्म हुई।''[12]

प्रेरणा

नासिरा जी इलाहाबाद के एक संभ्रांत शिया सय्यद परिवार में जन्मी प्रोफेसर सय्यद जामिन अली की बेटी है। जामिन अली इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उर्दू के विभागाध्यक्ष और प्रगतिशील विचारों के प्रसिद्ध कवि थे। परिवार में शायरी और ग़ज़लकारों की कमी नहीं थी। इसी कारण साहित्यिक संस्कार उन्हें विरासत में मिले थे। नासिरा शर्मा ने इस विरासत से प्रेरणा लेकर अपना लेखन कार्य आरंभ किया। साहित्य रचना में प्रेरणा देने के विषय में वे कहती भी हैं कि कृश्नचंदर के व्यंग्य से मैं बहुत प्रभावित थी। प्रेमचंद शुरू से अब तक पसंद आने वाले लेखक हैं। मैक्सिक गोर्की की माँ से बेहद प्रभावित थी। प्रभादत हसन मंटो की फसाद कहानियाँ मुझे बेहद प्रभावित करती थीं। इसके साथ ही वह तबस्सुम, कृष्ण बलदेव.. ....साहित्यिक केंद्र इलाहाबाद में रही नासिरा जी बचपन से ही संगम की गंगा–जमुनी रवायतें शायद नासिरा जी के संस्कारों में कूट–कूटकर भर गई थीं।

मीराबाई की भाँति उन्होंने गिरिधर गोपाल को तो नहीं, हाँ श्रीराम को अपना पति स्वीकार कर लिया। लोग कहें मीरा हो गई बावरी वाली स्थिति में जीने का आनंद उनकी सौहार्द्रपूर्ण वैचारिकता की एक व्यापक और खुला क्षितिज देता चला गया। नासिरा जी ने अपने नए–नए अनुभवों के प्रकाश में इस क्षितिज का भरपूर उपयोग किया। रोजा, नमाज़ और पूजा–पाठ के कर्मकाण्डीय आडम्बरों से मुक्त रहकर 'दिल व दब्त' आवर के हज्जे, अकबरस्त (यदि किसी का दिल जीत लिया जाये तो यही महा तीर्थ है) में गहरी आस्था रखने वाली नासिरा शर्मा ने अपने पति श्रीराम के ह्रदय को पूरी तरह जीत लिया। उनके पति राम ने एक लेखिका को

---

[12] सिन्हा, डॉ0 अमरीश–बोगदे से बाहर, शिल्पायन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, संस्करण–2015 पृ. 56

अपने साथ जीते हुए वह सारी आजादी दी जो लेखक चाहता है और अधिकतर लेखकों को ऐसी आजादी अपने परिवार से नहीं मिलती है। अपने परिवार के बारे में वे कहती हैं कि मेरे शौहर मुझे तोहफे देते हैं। आज तक मैंने अपने लिए कुछ नहीं खरीदा। साड़ियाँ, मेकअप, जेवर तो सभी मर्द देते हैं, पर जो खूबसूरत तोहफा डॉ. शर्मा साल में मुझे एक बार देते हैं वो है.... नीले रंग का पाँच नंबर का पायलट पेन, पैड, कार्ड, कागज, लिफाफे, टिकिट....। लो यह तुम्हारी जिंदगी है।

प्रभाव

नासिरा शर्मा के शब्दों जब कहानी किस्से पढ़ना शुरू किया तो मुझे वाजदा तबस्सुम और कृष्णचंद बहुत पसंद थे। कृष्णचंद्र का जो व्यंग्य था, दरअसल उससे मैं बहुत प्रभावित थी। इसके बाद मुझे नहीं लगता है कि भाषा को लेकर मैं किसी से इस तरह प्रभावित हुई हूँ कि उसका नाम मुझे याद हो, मगर हाँ देशी और विदेशी साहित्य उर्दू में खूब पढ़ा। हिंदी में इस समय अनेक लेखक हैं। जिनकी भाषा उनके कथा और चरित्र को बहुत रोचक बना देती है। जिससे पढ़ने का रस दुगना हो जाता है। पंजाबी, हिंदी मिश्रण वाले लेखकों में मुझे राजेन्द्र सिंह बेदी, कृष्णा सोबती, देवेनद्र इस्सर, कृष्णबलदेव वैद, फिर हिंदी–उर्दू मिश्रण वाली भाषा में भारती जी, कमलेश्वर, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, कमर मेवाडी, सूर्यबाला, सुदेश बत्रा, हसन जमाल, अब्दुल बिस्मिल्लाह।''[13]

अपनी बोली को हिंदी के साथ मिलाकर जो लेखकों ने भाषा लिखी वह भी पढ़ने में नया मजा देती है। जिसमें उषा किरण खान, मैत्रेयी पुष्पा, अनामिका पुराणों में रेणु अमृतलाल नागर है।

खालिस हिन्दी वह भी लेख के स्तर पर पढ़ने में विद्यानिवास मिश्र सोच का बिल्कुल अलग–सा माहौल जेहन में बनाते थे। उर्दू में इंतजार हुसैन, मर्गूब अली डॉ. फातमी हैं। जो हिन्दी में खासा दखल रखते हैं और उर्दू का बहुत ज्यादा प्रयोग करने के बावजूद या सीधे उर्दू में लिखने के बावजूद इनका गद्य अजनबी नहीं लगता है। कुछ लेखक कहानियों में जिस तरह आम बोलचाल से हटकर डिक्शनरी के शब्दों का प्रयोग करने में लगे हैं उनसे मैं कोई रिश्ता वैसा नहीं बना पाती हूँ

---

[13] उपाध्याय, करुणा शंकर–अवाँ विमर्श, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण–2009 पृ. 59

जैसा कि उन लेखकों से जो आम आदमी की बोली व अभिव्यक्ति को कहानी के संवाद में जगह देते हैं। इसके अलावा जाने कितने महत्वपूर्ण और पसंदीदा नाम हैं जिनका जिक्र में नहीं कर पा रही हूँ।

लेखकीय सरोकार

भारतीय सामाजिक परिवेश में खासकर मुस्लिम समाज की तमाम तरह की समस्याओं पर केन्द्रित अनेक अच्छी रचनाएँ देने वाली 'नासिरा शर्मा' आज हिंदी साहित्य की समर्थ पहचान बन चुकी हैं। फारसी में शिक्षित होने के बावजूद भी हिंदी के प्रति उनका विशेष प्रेम रहा है। इसी कारण उन्होंने अपनी मातृभाषा न होते हुए भी अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी को बनाया है। ईरान उनके साहित्यिक शोध का विषय रहा है। लेकिन इसके पूर्व उनकी भारतीय पृष्ठभूमि पर लिखी 'तकाजा' कहानी प्रकाशित हो चुकी थी। सच्चे अर्थों में उनका लेखन कार्य सन् 1974 में आरंभ हुआ। तब से लेकर आज तक नासिरा शर्मा निरंतर लिखती रही हैं। रुग्ण मान्यताओं के प्रति विद्रोह, स्वस्थ आधुनिक दृष्टिकोण नष्ट होते पारंपरिक मूल्यों की स्थापना और नारी जागृति उनकी साहित्यिक धरोहर है। वह विशिष्ट इसीलिए है कि वह नारी लेखिका होते हुए भी नारीवादी नहीं है। उनके लेखन के संबंध में ललित शुक्ल लिखते हैं–''आप नासिरा शर्मा की कोई भी रचना उठा लीजिए उसमें इंसानियत की पताका फहराती हुई मिलेगी। इसी बिंदू पर अरब का मकसद पूरा हो जाता है। साथ ही, रचना साहित्य की कोटि से आवर कालजयी हो जाती है। नासिरा शर्मा की संपूर्ण लेखन प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करने के बाद शुरू होता है। इसलिए उसकी प्रामाणिकता अविश्वसनीय नहीं होती। उनकी सोच बनावटी और छद्म से भरी हुई नहीं होती है। इसी कारण वह मानवीय यथार्थ के दायरों के अंडर रहता है.... उनकी कहानियाँ पहले रेखाओं में उभरती है। बाद में उनमें रंग भरा जाता है। तब कहीं जाकर पूरा चित्र पाठक के सामने आता है।''[14]

नासिरा शर्मा की लेखकीय विशिष्टता इस बात से है कि उन्होंने कथा–साहित्य में स्त्रियों की इस दुविधा की न केवल जीवन्तता प्रदान की बल्कि गहरी मानवीय संवेदना के साथ इस दुनिया की स्त्रियों की पक्षधर बनकर भी सामने

---

[14] लेखक की निजी वार्ता के दौरान विवेच्य लेखिका द्वारा उपलब्ध करायी गई टिप्पणी। पृ. 66

आई है। जनवाणी की अधिकारिणी व मखमल जैसी छहलने वाली साथ ही फर्राटेदार भाषा की धनी नासिरा पर लेखकीय सरोकार अविश्वसनीय है। नासिरा के पास भाषा वैभव है इसीलिए उनका नजरिया अध्ययन व अनुभवफलक काफी विस्तृत है।

मनोरंजन मात्र हेतु उन्होंने रचनाकर्म नहीं किया है। वह स्वयं कहती हैं–''सेक्स पर लिखना सरल है। पाठकों को आनंद भी मिलेगा। लेकिन स्त्री–पुरुष संबंधों में सेक्स के हिस्से पर लिखने के वक्त यदि इशारतन खूबसूरती से बात कह दी जाए और लेखक आगे बढ़ जाए तो बात ही कुछ और है। पाठक भाव को भी समझ जाता है तथा अश्लीलता भी नहीं झलकती है।''[15]

कथा लेखिका और पत्रकार नासिरा के व्यक्तित्व का एक दीगर पहलू यह भी है कि इन्होंने भारत के अलावा इराक व अफगानिस्तान जैसे कठिन परिस्थितियों से जूझ रहे मुल्कों का दौरा किया। बच–बचाके, हिम्मत और जुझारूपन के साथ इन्होंने इन देशों के गाँवों, शहरों, कस्बों में जाकर अलग–अलग घर–परिवार से घुल–मिलकर उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों को समझने की कोशिश की। लेखन यात्रा की यह विशेषता किसी अन्य साहित्यकार के पास नहीं रही। यह इकलौती पूँजी नासिरा ने अर्जित की है।

''नासिरा शर्मा के कथा–लेखन में शब्दों का अपव्यय नहीं होता। वाक्यों की बनावट और बुनावट उनकी अपनी है। यह उर्दू की आवश्यक शब्दावली में संवलित है। शब्द प्रयोगों की चातुरी से उनकी भाषा जानदार और धारदार बन गई है। यह विशिष्टता उन्हें अपने समकालीनों से एकांततः अलग करती है। एक बार रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि शब्दों के एक नहीं, अनेक शेड्स होते हैं। लेखक को उन शेड्स की सही पहचान होनी चाहिए।''[16]

2. जीवन परिचय एवं परिवेश

नासिरा शर्मा का जन्म एक सम्पन्न शिया मुस्लिम परिवार में हुआ था। हिंदी

---

[15] सिन्हा, डॉ0 अमरीश–बोगदे से बाहर, शिल्पायन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, संस्करण–2015 पृ. 58

[16] सिन्हा, डॉ0 अमरीश–बोगदे से बाहर, शिल्पायन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, संस्करण–2015 पृ. 59

के साहित्यिक केंद्र इलाहाबाद में 22 अगस्त 1948 को प्रातः 4 बजे इनका जन्म हुआ। वे तीनों बहनों में सबसे छोटी हैं। एक भाई उनसे बड़े थे। और एक भाई उनसे छोटे थे। अब तक सर्वाधिक प्यार और लगाव उन्होंने किसके साथ जिया, इसे जब वे याद करने बैठती हैं, तो बरबस सुर्खा की झूमती डालों पर गिलहरी की तरह सरसराते हुए एकदम से फुनगी पर पहुँच अचानक रुक कर नीचे झांकती हुई कहती हैं, ''आपको सच बताऊँ? बचपन का घर, भाई–बहनों का साथ, जवान माँ–बाप की छवि कभी नहीं मिटती। ये सब झूठ ही है कि किस पर आशिक हुए, किसके लिए जहर खाया। सच वही है, जो आपका बचपन है।''[17]

वे इस मर्म को बखूबी समझती है कि बचपन इश्क नहीं, एक सीधा सादा प्यार है। इश्क की खुशबू वक्त के साथ मुश्क की तरह काफूर हो सकती है लेकिन बचपन और बचपने के दुलार की सुगंध ताउम्र दिल में बसी होती है।

इलाहाबाद के साहित्यिक परिवेश ने उनमें विशिष्ट भाषिक चेतना का विकास किया। नासिरा शर्मा का परिवार सुसंस्कृत और विभिन्न प्रतिभाओं का खजाना रहा है। पिता उर्दू के प्रोफेसर होने के साथ ही प्रगतिशील विचारों वाले अच्छे कवि भी थे। इसी कारण उन्हें लेखकीय विरासत धरोहर के रूप में मिली। उनका परिवार कला और साहित्य का पुजारी रहा है। अपने खानदान के बारे में वे लिखती हैं,

''मेरा खानदान केवल पढ़ा–लिखा नहीं था, बल्कि शायरों का एक सिलसिला रखता था। घर के मर्दों के लिखे कसीदे, परिंदे, नौहे और ग़ज़लें औरतों द्वारा पढ़ीं और सराही जाती थीं।''[18]

पैतृक शहर के बारे में नासिरा कहती हैं–''बाकी शहर देता है तो निचोड़ता भी है। इलाहाबाद ने पाला, पोसा, बड़ा किया और कहा जाओ, जाकर नाम कमाओ। इस शहर का पूरे एशिया महादेश में योगदान है।''[19]

पिता की असमय मृत्यु के बाद स्वाभिमानी और स्वावलंबी माँ नाज़नीन बेगम ने दुनिया के सारे विरोधों को सहते हुए अपने बच्चों की परवरिश की। पिता के

---

[17] अग्निपथ की राही नासिरा शर्मा, सं.–सुदेरश बत्रा, पृ. 27

[18] सं. कन्हैयालाल नंदन गगनाँचल, जनवरी–मार्च 1999 (मेरा परिवेश और रचनाशीलता–नासिरा शर्मा, पृ. 112)

[19] सिन्हा, डॉ0 अमरीश–बोगदे से बाहर, शिल्पायन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, संस्करण–2015 पृ. 58

देहांत के बाद घर में सब कुछ था–रुपया, पैसा, भाई, बहन, नौकर–चाकर, रिश्ते और रिश्तेदार। मगर नहीं था तो एक पुरुष। जिसकी भूमिका माँ ने अपनी 30 वर्ष की उम्र में निभाई। उनकी माँ में केवल गृहस्थी की गाड़ी बखूबी से चलाई। बल्कि उस घर में व्यवहार और बोलचाल के सलीके की बुनियाद डाली।

नासिरा शर्मा के बड़े भाई सैय्यद मोहम्मद हेदर अंग्रेजी के अध्यापक थे। उनके मझले भाई सैय्यद मज़हर हैदर 'टाईम्स पत्र' समूह में रिपोर्टर है। उनकी बड़ी बहन फातमा हसन।

साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका थी, जो अब इस दुनिया में नहीं है। उनकी बहन मन्सूरा हैदर अलीगढ़ विश्वविद्यालय में इतिहास विषय की प्राध्यापिका है, वह उर्दू ग़ज़लें भी लिखती हैं। नासिरा जी के परिवार का वातावरण ही ऐसा रहा जिससे उन्हें किसी विषय पर चिंतन मनन करने की, उस पर अपने विचार प्रकट करने की जिज्ञासा रही।

अदब और तमीज आपके घर की विशेष पहचान बन गई थी। औरतों के प्रति दृष्टि में आपके परिवार में काफी उदारता रही। स्त्री और पुरुष को कमोवेश एक ही नज़र से देखा जाता था।

इस संदर्भ में स्वयं नासिरा शर्मा बयान करती है कि ''मर्द और औरत की स्थिति में जमीन और आसमान का फर्क नहीं था। औरत की इज्जत करना और उनसे मुहब्बत करना मर्दों का फर्ज था।''[20]

3. पारिवारिक पृष्ठभूमि

व्यक्तित्व विकास का प्रथम सोपान परिवार है। परिवार के हर एक सदस्य से समान प्रेम प्राप्त करना सौभाग्य ही है। नासिरा शर्मा ऐसी ही सद्भागी बेटी रही जिन्हें अपने परिवार के सभी सदस्यों का समान लाड़–प्यार मिला, वात्सल्य मिला। नासिरा शर्मा के दो भाई और दो बहनें हैं। बड़े भाई सय्यद मुहम्मद हैदर अंग्रेजी साहित्य का अध्यापन कार्य करते हैं। दूसरा भाई सय्यद मजहर हैदर एक पत्रकार है। दोनों बहनें साहित्य सृजन में रुचि रखती है। नासिरा जी की माँ नाजनीन बेगम के अतिरिक्त परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी रूप में साहित्य लेखन से जुड़े

---

[20] सं. कन्हैयालाल नंदन गगनाँचल, जनवरी–मार्च 1999 (मेरा परिवेश और रचनाशीलता–नासिरा शर्मा, पृ. 113)

हुए हैं। माँ ने पूरी गृहस्थी को अच्छी तरह संभाल रखा था, उन्होंने घर में व्यवहार और बोलचाल के सलीके की बुनियाद भी डाली। नासिरा जी को लेखकीय विरासत धरोहर के रूप में ही मिली। अपने खानदान के बारे में वे लिखती हैं– "मेरा परिवार केवल पढ़ा लिखा नहीं था बल्कि शायरों का एक सिलसिला रखता था। घर में मर्दों के लिखे कसीदे, परिन्दे, नौहे और गज़लें औरतों द्वारा पढ़ी और सराही जाती थीं।"[21]

नासिरा शर्मा घर में सबसे छोटी थीं। इस कारण उनका बचपन बहुत लाड–प्यार में बीता। बचपन में भी वह दो टूक बातें करती थीं। झूठ बोलना उनके संस्कार में नहीं था। आज तक उनका स्वभाव जस का तस है। पिता के इंतकाल के बाद अपने पिता के विषय में उनका कहना है कि ''मैं जब बहुत छोटी थी तब उनकी मृत्यु हुई मगर उनकी चर्चा हमेशा रही। उनके उसूल, पसंद, व्यवहार सोच पर इतने लोग बातें करते थे कि अंजाने ही हम उन सारी बातों पर चलने ओर मानने लगे।''[22]

उनकी माँ ने बच्चों को पिता की कमी कभी महसूस नहीं होने दी। ठीक उसी तर्ज पर बच्चों की परवरिश की जैसे कि उनके पति करते।.... नासिरा स्वयं स्वीकारती हैं कि उनका बचपन विभिन्नताओं से भरा गुजरा। इस संदर्भ में स्वयं उनका बयान है कि–''मुझे शिया और शुन्नी के भेद का सामना करना पड़ा। मैं तीसरी कक्षा में नई–नई इस स्कूल में आई थी। मैंने अपनी क्लास में टीचरों को कुछ बातें करते देखा था, जो बड़े गौर से मुझे ताक रही थी। पानी पीने की इजाजत लेकर जब में उनके पास से गुजरी तो मेरे कान में आवाज पड़ी अजीब बात है, यह कोई नहीं देखता कि नासिरा कितनी साफ, सुथरी, नीट स्टूडेंट है। पढ़ने में अच्छी मगर उसका 'शिया' होना खल रहा है। कहते हैं शिया थूककर पानी देते हैं। इनके यहाँ खाना–पीना नहीं चाहिए, क्योंकि मुर्दे के पेट से पानी निकाल वह खाने पर छिड़ककर देते हैं।''[23]

नासिरा शर्मा कहती हैं–''मेरे परिवार का वातावरण साहित्यिक था। शुरू की

---

[21] नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015 पृ. 284

[22] नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015 पृ. 284

[23] नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन सं. एम फीरोज अहमद, संस्करण– 2016 पृ. 15

पढ़ाई कान्वेंट में हुई फिर हमीदिया में दाखिल कराया गया जहाँ हर टीचर की मुझ पर नजर रहती थी। मैं क्या करती हूँ, क्या लिखती–पढ़ती हूँ, बार–बार यह एहसास दिलाया कि तुम किसकी बेटी हो, तुम्हें यह काम नहीं करना चाहिए, तुमसे हमारी कुछ उम्मीदें हैं। जिसने अंजाने ही उस पिता से दूर करना शुरू कर दिया, जिनकी कुछ झलकियाँ ही मुझे याद है। वह मुझे कोई 'सुपरमैन' लगते जिससे हर छोटा–बड़ा प्रभावित था और मुझे उनके इसी प्रभामण्डल को नकारने की जुर्रत पड़ी जिसने अरसे तक मुझे इस बात के लिए उकसाया कि मैं किसी को न बताऊँ कि मैं किसकी बेटी हूँ और मैं अपनी तरह जिऊँगी, चाहे कोई कुछ भी कहे। दोनों बड़ी बहनों के छोटे पदचिह्न थे, उनकी जिंदगी का एक नक्शा सामने था। भाई सबसे बड़े थे। दूसरा भाई मुझसे छोटा था। यही दो मर्द हमारे घर में थे। बचपन से परिवार की प्रतिष्ठा एवं उसके अतिरिक्त गुणों की चेतना लगातार उठते–बैठते बाहर वाले देते थे। जिससे जाने–अंजाने सचेत रहने की आदत पड़ गई थी। बचपन से ही एक विचित्र किस्म की जिम्मेदारी का अहसास जाग उठा था। घर में हर तरह का आराम था। नौकर–चाकर, सुख–सुविधा की कमी न थी। माँ का एक ही अरमान था कि हम पढ़े और खूब तरक्की करे। गाँव शहर दोनों से बराबर का नाता था। इसलिए जीवन भी एकाकी नहीं रहा। घर और स्कूल के मोहल्ले में जमीन–आसमान का फर्क था। घर के अलावा बहुत–सी बातें सहेलियों से मालूम पड़तीं। इन्होंने देखने–समझने की दृष्टि दी। घर में पढ़ना–लिखना एक दिनचर्चा जैसा था। बड़े अब्बा, दादा सब ही कवि थे। मेरी मझली बहन शायरा है। मेरे घर में हर माह एक बड़ा मुशायरा होता था, जहाँ से बहुत कवियों ने अपनी साहित्यिक यात्रा शुरू की। बड़ी बहन भी लिखती थी। ऐसे माहौल में लिखना अपने–आप शुरू हुआ। मगर इस अहसास के साथ कि सिर्फ लिखते जाना नहीं है। बल्कि ऐसा कुछ लिखना हो जो आगे का पाठ हो।''[24]

किसी भी रचनाकार की सफलता में उसके पारिवारिक परिवेश, शैक्षणिक अभ्यास एवं विचारधारा दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। साहित्यकार संवेदनशील प्राणी होता है। इसलिए उसके पारिवारिक प्रभाव एवं युगबोधी संदर्भ,

---

[24] नासिरा शर्मा : नासिरा शर्मा से साक्षात्कार (दो आबा अंक जून 2007), पृ. 116

चेतन तथा अवचेतन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। अतः आज नासिरा शर्मा उत्तरशती की बुद्धिजीवी वर्ग की लेखिकाओं में अपना स्थान रखती है।

4. वैवाहिक जीवन एवं जीवन दर्शन

नासिरा शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भूगोल की छात्रा थीं और इसी भूगोल में उन्हें भूगोल के प्रोफेसर डॉ. रामचंद्र शर्मा ने कुछ इस तरह से मिलाया कि वे उनके संग जन्म–जन्मान्तर के रिश्तों में बंध गई। नासिरा जी ने प्यार को भरपूर जिया, विवादों को रेत की मुश्त की तरह उड़ाया। साठ के दशक में प्रो. रामचंद्र शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भूगोल के व्याख्याता थे। अध्यापन कैरियर के शुरूआती दिनों में शर्मा जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में तो पढ़ाया ही था, बाद के दिनों में वे दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय चले आये थे। पर मिजोरम के शिलांग विश्वविद्यालय में सन् 1978 में प्रो. शर्मा जी ने ही भूगोल विभाग की शुरुआत करायी थी। और वर्ष 1998 में नागालैंड विश्वविद्यालय में भी भूगोल विभाग की स्थापना उन्होंने ही करायी थी। वे भूगोल विषय मे गोल्ड मेडलिस्ट थे। बीच में एक साल के लिए प्रो. शर्मा पी–एच.डी. करने एडिनबरा चले गये। लौट कर आये तो अचानक एक दिन उन्होंने नासिरा को 'प्रपोज' कर हैरान कर दिया। जाहिर है, इस प्रस्ताव को कबूलना आसान नहीं था। दूसरे मजहब में निकाह के लिए माँ को राजी करना टेढ़ी खीर थी। ब्राह्मण परिवारों में उस जमाने में क्योंकि बाल विवाह का चलन था इसलिए एक आशंका यह थी कि कहीं प्रो. शर्मा पहले से विवाहित न हो। घर से लेकर मन तक यह कश्मकश भी थी कि एक बिल्कुल दूसरे किस्म के परिवेश में उनका दाम्पत्य जीवन कितना क्या खुशनुमा रह पायेगा। परन्तु नासिरा जी जन्म–जन्मान्तर के रिश्तों में डॉ. रामचंद्र के साथ बँध गई। नासिरा अली से नासिरा शर्मा बनना जाहिर है आसान नहीं था। मूलतः आगरा के ब्राह्मण परिवार के रामचंद्र शर्मा का परिवार बाद के दिनों में राजस्थान में जा बसा था। इस तरह मामला पेचीदा था। ब्राह्मण परिवार के रामचंद्र शर्मा और नासिरा जी सैयद खानदान की बेटी। सन् 1964 में उनकी शादी हुई और उसके बाद दोनों हफ्ते भर बाद ही इंग्लैंड चले गये।

अपने विवाह को लेकर समाज की प्रतिक्रियाओं के विषय में वे लिखती

हैं–''जिस घर की बुनियाद राम और मैंने डाली थी, उसमें किसी तरह का बंधन, कटाक्ष का कोई स्थान नहीं था। हम दोनों को यह सच पता था कि हम जैसे चाहे रहें, जैसा चाहे व्यवहार करें, दूसरों की सहायता करें, मगर एक सच को नहीं भूलना है कि कुछ लोग जो हमारे इस विवाह से आहत, नाखुश होकर नफरत करते थे, उनके ख्यालात का जवाब किसी कटुता से न देकर, उनके अहसास को हमेशा इज्जत देना है। अगर जरूरत पड़े तो यह स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं कि जनाब आपको बुरा लगा होगा, लगना भी चाहिए, मगर हम इस तरह के विवाह में कोई बुराई नहीं देखते। उम्मीद है आप हमारी इस बात को दरगुजर करेंगे। इस अंदाज में हम भी पूरी जिंदगी मुतमुइन और विश्वास से भरे रहे और दूसरों ने भी अपने ख्यालात को अपने तक सीमित रखा, हमको खरी–खोटी नहीं सुनाई।''[25]

नासिरा जी के रचनात्मक व्यक्तित्व की ऊँचाई को शर्मा जी ने आकाश बनकर छाँव दिया। ''शर्मा जी ने मुझसे मुहब्बत की थी और जो इज्जत, एहतराम और लिखने–पढ़ने की आजादी उन्होंने मुझे दी वह और कोई शायद ही दे सकता।''[26]

नासिरा शर्मा की प्रबल इच्छा शक्ति और रामचंद्र शर्मा के सहयोग के बलबूते पर उनका वैवाहिक जीवन एक आदर्श रूप हमारे सामने प्रस्तुत करता है। नासिरा जी के दो बच्चे हैं। बड़ी बेटी अंजू इनके पति बदीउज्जमा से निकाह कर अंजू अंजूमन बनीं। पर अंजू से अंजूमन बनना उतना मुश्किल नहीं था, जितना नासिरा अली से नासिरा शर्मा बनना। अंजू को अपनी माँ से मिली इस विरासत का गहरे तक एहसास है। नासिरा जी के बेटे अनिल शर्मा एक केनेडियन ऐड फिल्म कंपनी से जुड़े है अनिल की पत्नी स्टेफनी अंग्रेज है। उनके बेटा अलेक्जेंडर अली शर्मा।

यानी विश्व भाग के साथ पूरा का पूरा एक मुकम्मल भारत।

5. शिक्षा एवं व्यवसाय

नासिरा शर्मा की स्नातक स्तर तक की शिक्षा इलाहाबाद में हुई। स्वयं तीन वर्षों तक नई दिल्ली स्थित ख्यातिनाम शिक्षण संस्थान जामिया मिलिया इस्लामिया

---

[25] राष्ट्र और मुसलमान, नासिरा शर्मा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011 पृ. 181–182

[26] नासिरा शर्मा : शब्द और संवेदना की मनोभूमि, पृ. 377

में फारसी का अध्यापन किया। उर्दू, हिंदी, फारसी, पश्तो और अंग्रेजी यानी कुल 5 भाषाओं की ज्ञाता लेखिका की समस्त रचनाएँ यही आभास कराती है कि उनकी लेखनी सदा सतर्क और सधी हुई रही है। न भटकाव, न बहकाव। परन्तु इन सबके बावजूद वह अपनी माँ को ही अपना पहला गुरू मानती है।

नासिरा शर्मा स्वयं एक बयान देती है। ''जिंदगी से भरपूर उस स्कूल, कॉलेज में कितनी विभिन्नताएँ थी। मेरी सहेलियों ने मुझे एक नई तरह की अनुभूतियाँ दी। उस कॉलेज में मेरे लिए अनुभवों का भण्डार था जिसको मैं जितना देखती, महसूस करती, उतनी ही दौलत समेटती थी। टीचरों ने मुझे कदम–कदम पर अहसास दिलाया मैं कौन हूँ, किसकी बेटी और किस खानदान से हूँ। वह सब मुझे पहचान के एक खास साँचे में रखना चाहते थे। उससे मैं परेशान थी। यह घुटन आखिर ऐसी बगावत में उभरी कि मैं बाकी बहन भाइयों की तरह अपने परिवार के बारे में पूछे जाने पर कभी अब्बा का नाम न लेती। दिल में ठान लिया था कि मैं अपनी जिंदगी पर किसी का हस्ताक्षर नहीं होने दूँगी और अपनी तरह बनकर रहूँगी।''[27]

उनकी यादों में उनका पहला स्कूल 'सेंट ऐंथनी कान्वेंट' और बाद के दिनों का स्कूल 'हमीदिया गर्ल्स कॉलेज' उसी पुराने रंग–रोगन और डेस्क–बेंच के साथ मौजूद है। इलाहाबाद के सिविल लाइन्स इलाके में स्थित 'सेंट ऐंथनी कान्वेंट' में वे दूसरे दर्जे तक ही पढ़ पायी। उनकी बड़ी बहनें दरअसल 'हमीदिया गर्ल्स इंटरमीडियेट कॉलेज' में पहले से पढ़ रही थी और पिता के निधन के बाद सुरक्षा की दृष्टि से माँ ने कहा कि अब सभी बहनें एक ही स्कूल में पढ़ने जाएगी। माँ की नज़र में हमीदिया गर्ल्स कॉलेज ही हम सभी बहनों की पढ़ाई के लिए उपर्युक्त था।

''स्कूल के दिनों से नासिरा जी की सहेली निगहत का प्रिय विषय अंग्रेजी था। तो खुद नासिरा जी का भूगोल। भूगोल प्रेम में नासिरा को क्या कुछ नहीं दिया। दुनिया और आसपास की जिंदगी से बेपनाह मोहब्बत है।''[28]

''नासिरा शर्मा ईरान से पीएच.डी. का कार्य करना चाहती थी किंतु ईरानी

---

[27] नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन सं. फीरोज अहमद, पृ. 44

[28] अग्निपथ की राही सं. सुदेश बत्रा, संस्करण–2013 पृ. 28

शासक के संबंध में आलोचनात्मक लेख लिखने के कारण उन्हें वहाँ संशोधन कार्य करने की अनुमति नहीं मिली। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में फारसी भाषा और उर्दू अध्यापन का कुशल कार्य किया। तीन वर्ष बाद उन्होंने यह कार्य छोड़ दिया। आयानगर रेडियो स्टेशन पर भी वे कई माह तक प्रोग्राम ऑफिसर के रूप में सेवारत थी। फिर तो पत्रकारिता के चलते कई जानी–मानी पत्र–पत्रिकाओं से स्थायी रूप से जुड़ी रही हैं। किसी भी पत्रकार के लिए प्रतिबद्धता एक ऐसा जज्बा है, जिसके बिना पत्रकारिता के मापदण्डों पर कोई भी पत्रकार खरा नहीं उतर सकता। कहने की जरूरत नहीं नासिरा शर्मा के प्रतिबद्धता के बीज शुरू से ही विकसित होते चले गए। उनके घर में साहित्य का माहौल शुरू से ही था। जोश मलीहाबादी और फिराक गोरखपुरी जैसे शायरों का उठना–बैठना, चर्चा, बहस आदि के बीच इल्म और अदब की पूरी दुनिया थी, जो नासिरा ने अपने अंदर रचा–बसा ली थी। घर में साहित्य का माहौल बना रहना, साहित्यिक गोष्ठियों एवं चर्चाओं का होना इस बात का कतई सबूत नहीं है कि घर के सारे सदस्य साहित्यकार बन जाएँ या साहित्यिक प्रतिबद्धता से सराबोर हो जाए। विभिन्न पीढ़ियों के साहित्यकारों को हमने देखा भी है। जो अच्छे खासे विद्वान रहे हैं। साहित्यिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता से सराबोर रहे हैं। मगर उनकी अगली पीढ़ी में इसका तनिक भी प्रभाव परिलक्षित नहीं होता और यह सिद्ध करता है कि कोई भी माहौल या दायरा उन चीजों के लिए सुविधा तो मुहैया करा सकता है, मगर वैसा बना नहीं सकता। वैसा बनने के लिए उसे अपने आपको उस माहौल के अनुसार ढालना होगा। उन सभी चीजों को आत्मसात् करना होगा, जो पिछली पीढ़ी में अच्छी लगी हैं। परंपरागत अच्छी चीजों को लेना होगा और इन सभी सरोकारों के साथ गहरा रिश्ता बनाना होगा, जो समाज को कहीं न कहीं प्रभावित करते हैं और यह सब नासिरा जी ने किया। तभी तो नासिरा, नासिरा शर्मा बन पाई।''[29]

6. पुरस्कार और सम्मान

नासिरा शर्मा ने उपन्यास, कहानी, निबंध, रिपोर्ताज, सीरियल लेखन, संस्मरण

---

[29] नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, सं.–एम. फीरोज अहमद, पृ. 66–67

आदि गद्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। नासिरा जी विरले विषयों के चयन के कारण हमेशा चर्चित रही है। ''ईरान और अफगानिस्तान जिस किसी विषय पर नासिरा जी की कलम चली हो, उसे समझने के लिए उन्हें समझना जरूरी है। वे कैसे लिखती है? क्या लिखती हैं? और क्यों लिखती हैं? यह सब सवाल और जवाब का विषय हो सकता है। लेकिन जब कभी वह इन विषयों पर बोलने लगती है तो ऐसा लगता है मानो कथा में क्रांति और क्रांति में कथा को जोड़ने या मिलाने का अथक प्रयास कर रही है। तब केवल उनकी जवान ही उन दास्तानों को नहीं कहती है। बल्कि उनकी आँखों में ऐसी अनगिनत दास्ताने झाँकने लगती है जो कोई भी लेखक सफों पर उतार नहीं सकता।''[30]

नासिरा जी स्त्री–विमर्श, हिंदू–मुस्लिम विमर्श की भी एक सशक्त कड़ी मानी जाती है। इसलिए कोई भी गोष्ठी, परिचर्चा उनकी रचनाओं के बगैर अधूरी समझी जाती है। अतः उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

- पत्रकार श्री, प्रतापगढ़, उत्तरप्रदेश, 1980
- अर्पण सम्मान, हिंदी अकादमी, दिल्ली, 1987–88
- गजानंद मुक्तिबोध नेशनल अवार्ड, भोपाल, 1995
- महादेवी वर्मा पुरस्कार, बिहार राजभाषा, 1997
- इण्डो रेशन अवार्ड फार चिल्डरेड लिटरेचर, 1999
- कृति सम्मान, हिंदी, अकादमी देहली, 2000
- वाग्मणि सम्मान, लेखिका संघ, जयपुर, 2003
- इन्दू शर्मा कथा सम्मान, यू.के., 2008
- नई धारा रचना सम्मान, 2009
- मीरा स्मृति सम्मान, इलाहाबाद, 2009
- बाल साहित्य सम्मान, खतीमा, 2010
- महात्मा गांधी सम्मान, हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र., 2011

---

[30] नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, सं.–एम. फीरोज अहमद, पृ. 156

- स्पन्दन, 2013
- राही मासूम रजा सम्मान, लखनऊ, उ.प्र., 2014
- कथाक्रम सम्मान, लखनऊ, 2014
- साहित्य अकादमी पुरस्कार 'पारिजात', 2016
- व्यास सम्मान 'कागज की नाव', 2019

7. कृतित्व परिचय

नासिरा शर्मा के कृतित्व के संबंध में डॉ. ज्योति सिंह का कथन है। ''लेखक को विशिष्ट बनाती है उसकी दृष्टि, जीवन को देखने का उसका अपना नजरिया।

यह दृष्टि जब इंसान और उसकी इंसानियत को किसी भी जाति, धर्म, मजहब, संप्रदाय, देश, प्रांत, सरहद तथा विचारधारा से ऊपर मानकर 'विश्वमानवता' की पैरवी करते हुए भाईचारे का पैगाम देती है तो रचनाकार को महान बना देती है। नासिरा शर्मा के पास यही दृष्टि है, जो आधुनिक कथा–लेखन से उनकी विशिष्ट उपस्थिति का अहसास कराती है। नासिरा शर्मा बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। सृजनात्मक लेखन के अतिरिक्त उन्होंने अनुवाद एवं स्वतंत्र पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और पश्तो भाषाओं पर उनका समान अधिकार है। ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त वहाँ के साहित्य, कला और सांस्कृतिक रिश्तों में उनकी गहरी पैठ है।''[31]

हिंदी की गद्य विधाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। यथा सात नदियाँ एक समंदर, शाल्मली, ठीकरे की मंगनी, जिंदा मुहावरे, तुम डाल–डाल हम पात–पात, शामी कागज, पत्थर गली, संगसार, इब्ने मरियम, सबीना के चालीस चोर, खुदा की वापसी, इंसानी नस्ल, गूँगा आसमान, दूसरा ताजमहल, बुतखाना (कहानी संग्रह), शाहनामा–ए–फिरदौसी, गुलिस्तान–ए–सादी, बर्निंग पायर, इकोज आफ ईरानियन रिवोल्यूशन, प्रोटेक्ट पोयट्री, किस्सा जाम का, काली छोटी मछली, फारसी की रोचक कहानियाँ (अनुवाद), अफगानिस्तान : बुजकशी का मैदान (दो खण्डों में अध्ययन), किताब के बहाने (लेख संग्रह), सबीना के चालीस चोर, दहलीज

---

[31] नासिरा शर्मा : एक मूल्यांकन, सं. फीरोज अहमद, पृ. 207

(नाटक), माँ, तड़प, आया बसंत सखी, काली मोहिनी, सेमल का दरख्त, बावली (टीवी फिल्म), वापसी, सस्तमीन, शाल्मली (सीरियल), पढ़ने का हक, सच्ची सहेली, गिल्ली बी, धन्यवाद। धन्यवाद (साक्षरता), औरत के लिए औरत (निबंध), संसार अपने–अपने (बाल साहित्य) : 'सारिका' 'पुनश्च' का ईरानी क्रांति विशेषांक (संयोजन), 'वर्तमान साहित्य' का महिला लेखन अंक एवं क्षितिज पर राजधानी कहानियों का (संपादन) आदि। 'जहाँ फब्बारे लहू रोते हैं' रिपोर्ताज लेखन परंपरा में एक उत्कृष्ट कड़ी है। वस्तुतः यह विधा पिछले दशक से महत्वपूर्ण ढंग से उभर कर सामने आयी है। हिंदी का अधिकांश रिपोर्ताज पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित हुआ है। 'जहां फब्बारे लहू रोते हैं' के लेख भी 'वाया', 'दिनमान', 'सारिका; (1981), नवभारत टाइम्स (1982), पुनश्च (1985), नई दुनिया (1985 उर्दू), संचेतना (1989), रविवार (1989), संडे आब्जर्वर (1990), राष्ट्रीय सहारा (2003), आदि में पहले प्रकाशित हुए हैं।

प्रकाशित उपन्यास

प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में महिला लेखिकाओं का नितांत अभाव है। प्रेमचंदोत्तर औपन्यासिक दृष्टि से जिस प्रकार नई करवट लेता है। उसी प्रकार यहाँ आकर अनेक नए हस्ताक्षर भी सामने आते हैं। इसी युग में उपन्यास के क्षेत्र में महिला लेखिकाएँ अपनी पृथक पहचान बनाती है। युगानुरूप और समय के साथ इस युग में नई नारी प्रतिभाओं का अभ्युदय हो गया। समकालीन महिला उपन्यासकारों ने अनेक अछूते संदर्भों को उजागर किया है। इनमें नासिरा शर्मा के उपन्यास भी अपनी पहचान बनाते हैं।''[32]

'सात नदियाँ : एक समुन्दर' (1984)– यह उपन्यास ईरान की खूनी क्रांति पर लिखित उपन्यास है, यह उपन्यास एक ऐसी सच्चाई को उद्घाटित करता है, राजनीति पावर गेम है। यही राजनीति है जो किसी की अच्छाई और बुराई को तय करती है, सच्चाई के मुँह पर नकाब डालती है और बुराई के झंडे गाड़ती है।

'शाल्मली' इस उपन्यास में भारतीय कामकाजी महिलाओं के जीव एवं समस्याओं को उभारा है। इस उपन्यास की जमीन पर नारी का एक अलग रूप

---

[32] विजय राउत, नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, गोविन्द नगर कानपुर, संस्करण 2010, पृ.33

उभरा है, जो नारी की परम्परागत प्रतिभा को तोड़ता है। इस उपन्यास की नायिका शाल्मली है 'शाल्मली' इसके परम्परागत नायिका नहीं है, बल्कि वह अपनी मौजूदगी के साथ व्यक्ति का सरोकार चाहे जितना गहरा हो, घर उसे भेज दिए जाने के प्रति मौन स्वीकार नहीं होना चाहिए।

'ठीकरे की मंगनी'– इस उपन्यास में भारतीय ग्रामीण महिला के जीवन के संघर्ष को उकेरा है।

'जिंदा मुहावरे' (1993)– भारत में बंटवारे के बाद भारतीय–मुस्लिम समाज के जीवन और समस्याओं को चित्रित किया गया है। यूं तो भारत–पाक बंटवारे को लेकर हिन्दी साहित्य जगत में अनेक कृतियाँ आई हैं, जो इन्सान को जानवर में तब्दील होता हुआ दिखाती है। हँसते हुए लोग किस प्रकार मातम के गर्त में पहुँच जाते हैं। सदियों से सांझा संस्कृति के रूप में रहते आप लोग जो हमेशा खून का रंग एक कहते थे, आज वही एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये हैं। भारत–पाक बंटवारे पर अनेक कृतियाँ हैं, पर नासिरा शर्मा का 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास इन सब में अपना अलग स्थान रखता है।

'अक्षयवट' (2003)– यह उपन्यास धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी इलाहाबाद पर केन्द्रित है, जिसमें बहुत सी इलाहाबाद शहर की प्राचीनता एवं नवीनता का समावेशीकरण है, इसके अलावा संगम नगरी की विरासत एवं मर्मस्पर्शता को इस उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया है। कहना होगा कि नासिरा शर्मा के इस 'अक्षयवट' उपन्यास में इलाहाबाद शहर अपने सारे नये पुराने चटक–मद्धिम रंगों और आयामों के साथ जीवन्त रूप में उपस्थित है। ''हर मोहल्ले में दुर्गापूजा के उपलक्ष्य में सड़क या गली किनारे 'लकी ड्रा' के छोटे–छोटे पण्डाल लगे हुए थे जिसमें एक रूपये के ड्रा में मोटर साइकिल, पंखा, टी.वी. आदि मिलने वाली वस्तुएँ ऊपर पण्डाल की छत पर सजी होतीं। हर आने–जानेवाले का ध्यान लाउडस्पीकर द्वारा लगतार अपनी ओर खींचा जा रहा था।''[33]

इसमें शहर की धड़कन में रची–वसी ऐसी युवा जिंदगियों की मर्मस्पर्शी कहानी है जो विरासत में मिली तमाम उपलब्धियों के बावजूद वर्तमान व्यवस्था की

---

[33] नासिरा शर्मा, अक्षयवट, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ.8

सड़ांध और आपा–धापी में अवसाद–भरी जिन्दगी जीने के लिए अभिशप्त है। निस्संदेह नासिरा शर्मा ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से जीवन की गहन–जकड़न और समय की विसंगतियों को पहचाने और उनसे मुठभेड़ कराने की कोशिश की है। वास्तव में 'अक्षयवट' को पढ़ना बनती बिगड़ती और बदरंग होती सभ्यता से साक्षात्कार करना भी है।

'कुइयाँजान' (2005)– लेखिका ने 'कुइयाँजान' उपन्यास में प्राकृतिक एवं पर्यावरणीय परिवर्तन को व्यक्त किया है। मानव के सारे विश्व के जल स्रोतों को अपने गतिविधियों के द्वारा दूषित किया है। भौतिकवादी संस्कृति ने पर्यावरर्णीय संवेदना को अधिक नुकसान पहुँचाय है। कुइयाँ अर्थात् वह जलस्त्रोत जो मनुष्य की प्यास आदिम युग से ही बुझाता आया है, जो शायद जिजीविषा की पुकार पर भाव की पहली खोज थी। पहली उपलब्धि जो हमने अतीत में अपनी प्राण रक्षा के लिए प्यास बुझाकर हासिल की थी। आज भी उतनी ही तीव्र है पर आधुनिक टेक्नोलॉजी में मनुष्य ने उस मूल स्त्रोत को आदिम करार दे दिया है। अपनी मशीनी ताकत के बल पर प्रकृति के इस अक्षय स्त्रोत 'जल' से खिलवाड़ कर रहा है। जिसका परिणाम यह है कि अपार जलसम्पदा को नष्ट कर रहे हैं उसके कारण वह दिन दूर नहीं जब पानी को लेकर विश्व एक और महायुद्ध की दहलीज पर खड़ा होगा। ''मौलवी साहब की मौत के बाद बदलू की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, कहां जाए? इस मसजिद में ठहरे या फिर मजदूरी कर पेट पाले? वैसे भी अब मसजिद में इक्के–दुक्के लोगों का आना भी बंद हो गया था। जब से आंधी के चलते नीम की बड़ी–सी डाल टूटकर मसजिद की छत पर गिरी थी, आधी मसजिद धूप से भरी रहती थी। उसकी मरम्मत कौन कराए?''[34] इंसानी संवेदना और धरती से पानी के सूखते जाने की कहानी का वरिष्ठ उपन्यासकार नासिरा ने एक पूरे उपन्यास में इस तरह ढाला है कि कहानी खुद–ब–खुद बहती चली गई प्रतीत होती हैं। यह उपन्यास बताता है कि जमीन और इन्सान की प्यास कैसे एक–दूसरे से गहरे में जुड़ी है। पानी के रहने और न रहने पर, दोनों हालातों में इंसानी रिश्ते के रंग और सम्बन्ध मुखतलिक हो उठते हैं।

---

[34] नासिरा शर्मा, कुइयाँजान, सामयिक पेपरबैक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.15

'जीरो रोड' (2008)– इसका कथानक हमें इलाहाबाद के ठहरे और पिछड़े मोहल्ले चौक से शुरू होकर दुबई जैसे अत्याधुनिक व्यापारी नगर की रफ्तार तक ले जाती है। यह वह नगर है जहाँ लगभग सभी राष्ट्रों के लोग अपनी रोजी–रोटी कमाने के लिए रेगिस्तान में जमा हुए हैं। दरअसल यह अपनी मर्जी से यहाँ नहीं आये हैं बल्कि अपने हालात से उखड़े वे लोग हैं जो बम संस्कृति से खदेड़े गये हैं, निराश्रित है और अपने ख्वाब एवं ख्याल को ढूँढते फिर सजाने के लिए कमर कसे हैं। यह उपन्यास बढ़ते उपनिवेशवाद की ओर संकेत करता है। जो आदमी से उसके एहसास छीन मशीनों में तब्दील करते जा रहे हैं।

'पारिजात'– पारिजात केवल एक वृक्ष कथा नहीं है, बल्कि यथार्थ की धरती पर लिखी एक ऐसी तमन्ना है जो रोहन के खून में रेशा–रेशा बनकर उतरी है और रूही के श्वासों में ख्वाब बनकर घुल गई है। उपन्यास में 'पारिजात' एक रूपक नहीं वह दरअसल नए पुराने रिश्तों की दास्तान है।

उपन्यास की कथावस्तु में इतिहास नहीं किरदार बनकर उभरता है। तो कही वर्तमान ओर अतीत के बीच सूत्रधार की भूमिका निभाता नजर आता है। उसकी इस आवाजाही में उपन्यास के पात्र कभी तारीख से गुरेजाँ नजर आते हैं तो कभी उसको तलाश करते हुए खुद अपनी खोज में लग जाते हैं। उनकी इस कोशिश में बहुत से संदर्भ, सख्सियतें, घटनाएँ चाहे–अनचाहे अपना आकार ग्रहण कर लेती हैं और समय विशेष पर पड़ी धूल को अपनी उपस्थिति से खारिज कर एक नई स्मृति की तरफ ले जाती हैं।

'कागज की नाँव'– 'कागज की नाँव' में बिहार के एक जनपद के मुस्लिम परिवार के माध्यम से सदियों से पनपी सवरी गंगा तहजीब की मार्मिक और ह्रदयस्पर्शी कहानी लिखी गयी है। जिसमें जहूर मियां पात्र के माध्यम से हमारे आस–पास के जीवन और चुनौतियों को दंश किया गया है।

'बहिश्ते जहरा'– यह उपन्यास ईरान की क्रान्ति की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। राजनीति, आज इन्सानी खून में प्रवाहित है। उसके प्रकोप से इंसानियत बीमार और दम तोड़ती नजर आती है। संक्षेप में राजनीति सिर्फ 'पॉवर गेम' है यही राजनीति है जो किसी भी अच्छाई और बुराई को तय करती है तथा सच्चाई के मुँह

पर नकाब डालकर बुराई के झण्डे गाड़ती है। जिन्दगी आज राजनीति के कारावास में कैद है।

आधुनिक युग में महिला लेखिकाओं ने उपन्यास के क्षेत्र में अपनी पृथक पहचान बनाई है। युग पुरूष इस युग की नई प्रतिभाओं का अभ्युदय हो गया है। समकालीन महिला उपन्यासकारों ने अनेक अछूते संदर्भों को उजागर किया है। इनके नासिरा शर्मा के उपन्यास अपनी महत्वपूर्ण पहचान रखते हैं, उन्होंने कहानी लेखन से सृजन यात्रा आरंभ क्यो न की हो बावजूद इसके उपन्यास के क्षेत्र में विशेष रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त करके अपना एक अलग स्थान निर्माण किया है। लेखिका प्रत्येक उपन्यास में एक नए विषय को लेकर उपस्थित हुई है। वैसे उनके समग्र साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी जीवन का चित्रण एवं समस्याओं का उद्घाटन रहा है। फिर भी उन्होंने अपने अपने उपन्यासों में न केवल इससे सम्बन्धित कथ्य को चितेरा है बल्कि नई अवभूमि का भी अन्वेषण किया है।

'राष्ट्र और मुसलमान'– इस पुस्तक में नासिरा शर्मा ने लिखा है कि मुसलमान एक आम आदमी की तरह अपनी खूबी और कमजोरी के साथ मौजूद है। वह स्वयं अपनी बात कहने में सक्षम है इसलिए वह किसी बड़े नाम के सहारे या धार्मिक नेताओं के बल पर आगे नहीं बढ़ता है।

'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' (2003) रिपोर्ताज– ईरान की खूनी क्रांति और ईरान की राजनीतिक हालत से रूबरू कराता है। ईरान में शाह के विरूद्ध हुई क्रांति किन हालात से गुजरी इसका लेखा–जोखा का परिचय मिलता है। इसका रचना में सादी और फिरदौसी का खुशहाल ईरान हमें इन्कलाब की आग में जलता हुआ नजर आता है। यह रचना नासिरा शर्मा की विशिष्ट रचना है, जिसमें ईरान के क्रांतिकारी विचारों को दर्शाया है, तथा सामाजिक एवं आर्थिक मूल्यों को अवतीर्ण किया है। ईरान की खूनी क्रांति को उन्होंने लेखबद्ध करने का प्रयास किया है।

''मोहर्रम की पहली तारीख़ का चाँद दिखा था। चारों तरफ़ से 'अल्लाहो अक़बर' की आवाज़ें बुलन्द हो रही थीं। कितना अद्भुत था सब कुछ। शहर में

अँधेरा उस पर से विभिन्न आवाज़ों के उतार–चढ़ाव, विभिन्न उम्रों के रंगों का मिश्रण, अजीब समां था। दस मिनट तक 'अल्लाहो अक़बर' का सुर गूँजता रहा।''[35]

कहानी संग्रह

नासिरा शर्मा का साहित्य तगत में प्रवेश ही मूलतः कहानी के माध्यम से हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में विभिन्न विषयों को उजागर किया है उनके अब तक निम्न कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं जो इस प्रकार हैं– पत्थर गली (1986), संगसार (1993), इब्नेमरियम (1994), शामी कागज (1997), शबीना के चालीस चोर (1997), खुदा की वापसी (1999), इन्सानी नस्ल (2000), शीर्ष कहानियाँ (2001), और दूसरा ताजमहल (2002),। इन सभी कहानी संग्रहों की कहानियाँ अपनी निजता एवं विशेषता लेकर प्रकट होती हैं। अतः इसे स्पष्ट कराने हेतु इन कहानियों का संक्षिप्त परिचय देखना संगत होगा।

'शामी कागज' नासिरा शर्मा ने 'शामी कागज' में बहुत–सी कहानियों का संग्रह किया है। जिसमें उन्होंने ईरान के परिवेश, वहाँ के लोगों के सामाजिक एवं पारिवारिक हादसे तथा तकलीफों को व्यक्त किया है। ईरान यात्रा के दौरान उन्हें ईरान को करीब से देखने का मौका मिला। किसी भी रंग को रंगने के लिए उस परिवेश की भाषा, वातावरण, वहाँ के लोग, सभ्यता, संस्कृति वहाँ की आबो–हबा में घुल–मिलना आवश्यक होता है। ''ये कहानियाँ केवल उस जनसमुदाय की संवेदनाओं और वेदनाओं की धड़कनें हैं, जो धरती से जुड़ा, आशा और निराशा का संघर्षमय सफर तय कर रहा है।''[36]

ईरान की पृष्ठभूमि पर लिखी यह कहानियाँ यथार्थ पर आधारित हैं। ईरान में एक वर्ग ऐसा है, जिसके पास धन, दौलत, ऐश्वर्य, प्रकृति सौंदर्य, खुशहाली, मस्ती हैं तो दूसरा एक वर्ग जो गरीबी, उलझन, तड़प, पतन और टीस से भरा है। आम जीवन जीने के लिए जद्दोजहद करता है। समाज के खोखलेपन और अमीरी–गरीबी की खाई साफ तौर से बेनकाब करता है। समाज में कहानियाँ केवल उस जनसमुदाय की संवेदनाओं और वेदनाओं की धड़कने हैं, जो धरती से जुड़ी

---

[35] नासिरा शर्मा, जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003, पृ. 61

[36] नासिरा शर्मा, शामी काग़ज़, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृ. 7

आशा और निराशा का संघर्षमय सफर तय कर रही हैं। 'शामीकागज' और 'खुशबू के रंग' इन दो कहानियों में लेखिका ने ऐसे मनोवैज्ञानिक तथ्य को प्रस्तुत किया है जो पाठक के मन को आकर्षित करती है। इन दोनों कहानियों में एक ऐसे नारी का चित्रण है जो पहले प्यार को कभी भूल नहीं पाती। यह प्यार उस पति के रूप में था जो प्रेमी के रूप में मिला हो वह उसके दिलो–दिमाग मे हमेशा छाया रहता है। पाशा अपने पति के साथ बिताए क्षणों में ही अपनी सारी जिंदगी गुजारना चाहती है, तो 'खुशबू के रंग' में लेखिका अपने प्रेमी की यादों में जिन्दगी का सफर तय करना चाहती है। इस प्रकार ईरानी परिवेश के रंग में रंगी कहानियाँ 'शामी कागज इस संग्रह में प्रस्तुत हैं।'

'पत्थर गली' (1980)– नासिरा शर्मा की कहानी संग्रह 'पत्थर गली' में मुस्लिम परिवेश को व्यक्त किया है, जिसमें जीवन की विषंगतियों तथा सांस्कृतिक मूल्यों के पतन को दर्शाया है। इस 'पत्थर गली' में रहने वाले अपने आजादी के लिए छटपटाते हैं। जिंदा रहने के लिए जद्दोजहद करते हैं, रूढ़िवादिता की बेड़ियाँ तोड़कर खुले आसमान में उड़ना चाहते हैं। पंखों को पसार कर उसमें सूरज की गरमी और रोशनी भरना चाहते हैं और इस कश्मकश में पत्थर से टकराकर लहूलुहान हो उठते हैं। ''पत्थर गली की परिधि वह पिछड़ा समाज या वर्ग जो आगे बढ़ने के लिए आतुर नजर आता है और अपने पिंजड़ों की तीलियाँ तोड़ना चाहता है। इस वर्ग की अनेक कठिनाइयाँ हैं– जहाँ कोंपले फूटने से पहले झड़ जाती हैं, चिराग जलने से पहले बुझ जाते हैं, फूल खिलने से पहले मुरझा जाते हैं।''[37]

इन कहानियों के द्वारा नासिरा शर्मा ने नारी जाति की घुटन, बेवसी और मुक्तिकामी छटपटाहट का ऐसा चित्रण किया है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। नारी चाहे किसी समाज की क्यों न हो टुकड़ों में बंटे रहना और दम तोड़ देना यही उसकी नियति है। रचना शिल्प के माध्यम से उन्होंने नारी का यह सच सारे समाज के सामने रखा है।

'बवाली' इस कहानी में सलमा अपना सारा जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर देती है फिर भी संतान न होने के कारण उसकी अवहेलना की जाती है और

---

[37] नासिरा शर्मा, पत्थर गली, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2018, पृ. 7

जब यह सौभाग्य उसे प्राप्त होता है तो पति किसी और का होता है। उसकी इस मानसिक त्रासदी का चित्रण है।

'सरहद के इस पार' इस कथा का नायक रेहान है। यह भारत में रहने वाले एक मुस्लिम परिवार की कथा है। भारत–पाक के बंटवारे का असर रेहान पर होता है। और अनेक मानसिक त्रासदी के कारण पगलाने लगता है। उसे यह नहीं समझ आता कि भारत उसका देश है? उसके पूर्वज यहीं जन्मे और मरे हैं, फिर पराई दृष्टि से क्यों देखा जा रहा है, वह भी भारत से उतना ही प्यार करता है, जितना और हिन्दुस्तानी। चारों ओर हिन्दू–मुस्लिम फसाद क्यों फैला है? ऐसे कई प्रश्न हैं जिसके उत्तर उसके संवेदनशील मन को नहीं मिल पाते।

'कच्ची दीवारें' एक वृद्ध पति–पत्नी की कथा है वह एक बड़े से कच्चे मकान में रहते हैं। औलाद न होने के कारण लोगों की लालची नजरें उनके इस मकान पर हरदम गड़ी रहती हैं। 'ताबुत' कहानी में तीन असहाय युवतियों की गाथा है, जो अभाव में जीते हुए भी अपने उज्ज्वल भविष्य के सपने देखती हैं। निर्धन होते हुए भी जीने को जद्दोज़हद के लिए वह हमेशा संघर्षरत रहती हैं। उनके सपने, उनकी सोच हमें मानसिक रूप से सोचने को मजबूर करती है।

'सिक्का' कहानी में एक वेश्या के जीवन का अत्यन्त मार्मिक चित्रण हुआ है। एक वेश्या किसी प्रेमी की खोज में है। जो सच्चा प्रेम करे किन्तु वह इस मोहभंग की स्थिति से तब निकलती है जब उसे यह आभास होता है कि एक वेश्या को प्रेम करने का अधिकार नहीं। वह तो उस बाजारू सिक्के की भाँति है, जिसे एक हाथ से दूसरे हाथ में होकर गुजरते जाना है।

'संगसार' नासिरा शर्मा का 'संगसार' नामक कथा संग्रह 1993 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में अट्ठारह कहानियाँ और एक कविता संग्रहीत है। ये कहानियाँ 1980 और 1992 के बीच लिखी गई थीं। जब ईरान में क्रान्ति चरम सीमा पर थी और ईरान–ईराक युद्ध (1980–1988) से लोगों का जीवन अस्त–व्यस्त हो गया था।

ईरानी क्रांति के विविध पक्षों को आधार बनाकर लिखी कहानियों और अन्तिम कविता 'इन अनाम ईरानी शहीदों को श्रद्धांजलि है।' 'यहूदी सरगर्दन' के डॉ. बोरहान की पीड़ा भी क्रान्ति की धर्मांधता से उपजी है। यह एक ऐसे व्यक्ति की करूण कथा है जो ईरानी नागरिक होने के बावजूद ईरानी नागरिक नहीं माना

जाता। इस कहानी में धर्म सत्ता के लिए उपयोग कर किस तरह धर्म की जंजीरें डाली जाती हैं। यह दर्शाया गया है।

'भूख' कहानी में ईरान का वह वर्ग जो निर्धन कहलाता है, ऐसे वर्ग के लोगों के लिए भूख और संघर्ष की कथा दी है जो पल–पल मर रहे हैं। 'खलिश' कहानी में एक युवक की आत्मग्लानि की अभिव्यक्ति बड़े सुन्दर ढंग से की है। 'गूँगा आसमान' की ''मेहर अंगीज निर्दोष होते हुए भी दोषी ठहरायी जाती है और वह गूंगे आकाश की तरह चुप रहने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर पाती है।''[38]

'इब्ने मरियम' लेखिका नासिरा शर्मा ने 'इब्ने मरियम' में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल की गैस त्रासदी को दर्शाया है। लोगों का जीवन गैस त्रासदी के कारण सामाजिक एवं पारिवारिक विसंगतियों के साथ–साथ राजनीतिक समस्याओं से भी ग्रसित है। राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं को आधार बनाकर लेखिका ने समस्या में फँसे, इंसान जो जीने के लिए छटपटाता है जो कभी–कभी उसका संघर्ष अपने अधिकार को पाने के लिए होता है तो कभी समाज को बेहतर बनाने के लिए करता है। ''इब्ने मरियम' संग्रह की सारी कहानियाँ एक विशेष स्थिति की हैं, जिसमें फँसा इन्सान जीने के लिए छटपटाता है। कभी उसका यह संघर्ष अपने अधिकार को पाने के लिए होता है तो कभी समाज को बेहतर बनाने के लिए करता है। ऐसे ही हालात की कहानी 'जैतून के साये' हैं, जिसको लिखते हुए मेरे मन–मस्तिष्क में इतिहास के दरीचे खुले हुए थे।''[39]

'काला सूरज' में यूथोपिया के अकाल (1980) पीड़ित लोगों के दुःख और व्यथा को व्यक्त किया गया है। राहब मोआस खुशहाली, हरियाली का सपना देखती है। उसकी आँखें सब कुछ खोकर सपने को अपना लेती हैं।

'इब्ने मरियम' नामक कहानी भोपाल के वायुकांड पर आधारित है। इस वायुकांड के कारण हजारों लोग लंगड़े–लूले हो गये थे। न जाने कितने की तादाद में घर टूट गये थे। वायुकांड में जो मर गए उनकी तो खैर, लेकिन जो बच गए

---

[38] फातिमा शेख अफरोज, नासिरा शर्मा का कथा साहित्य वर्तमान समय के सरोकार, अतुल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2012, पृ. 90

[39] नासिरा शर्मा, इब्ने मरियम, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, पृ.6 39

वह एक सदमे की तरह जिंदगी को जिए जा रहे थे। आम जनता की तड़प और उनकी बेबसी को ये कहानी दर्शाती है।

'सबीना के चालीस चोर' नामक बारह कहानियों का संग्रह सन् 1997 में प्रकाशित हुआ। उनका यह कहानी संग्रह आज़ादी के पचासवीं वर्ष गांठ के समय प्रकाशित हुआ। वह कहती है पिछली पाँच दहाइयों में हिन्दुस्तान ने बहुत उन्नति की है, मगर एक सच और भी है कि हमने पाँच हजार साल पुरानी सभ्यता एवं संस्कृति से नाता तोड़ भविष्य को पकड़ने में बहुत कुछ खोया भी है।

इस कहानी संग्रह में उन चोरों को बेनकाब किया गया है, जो व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण समाज के दुर्बल राष्ट्रीय एकता एवं भारतीय सभ्यता को खण्डित करने वालों की भी कमी नहीं है। 'सबीना के चालीस चोर' में छः वर्षीय सबीना नामक बालिका भारत में हो रहे हिन्दू–मुस्लिम फसाद को अलीबाबा और चालीस चोर के संदर्भ में देखने की कोशिश करती है 'सबीना एक छोटी लड़की है जो बड़ों जैसी दृष्टि और समझ रखती है। उनका मानना है कि फसाद कराने वाले, दूसरों का हक मारने वाले ही चालीस चोर हैं, जो हमेशा कमजोर वर्ग को ही दबाते हैं।

'गूँगी गवाही' इस कहानी में लेखिका ने एक नाई परिवार का चित्रण किया है। आज हमारे देश में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि आम आदमी उसकी चक्की में पिसता जा रहा है। चाँद का कत्ल हो जाता है। चम्पा की गवाही गूंगी मानी जाती है, जिससे इस निचले तबके के आदमी को न्याय नहीं मिल जाता। कानून भी जैसे गूंगा हो गया है, ऐसा लगता है।

'नौ तवा' कहानी में हिन्दू–मुसलमान फसाद मे एक खुशहाल परिवार की दुर्दशा होती है यह दिखाया है। इस फसाद में बंदूकों और लाठियों के जोर पर अपना उल्लू सीधा करते हैं।

खुदा की वापसी, कहानी में लेखिका ने महिलाओं की स्थिति को व्यक्त किया है, जिसमें जीवन की चरमपंथी विचारधारा को समाज के समक्ष उद्‌बोधित किया है। 'पति–पत्नी के सम्बन्धों में सिर्फ इसलिए दरार पड़ जाती है और अच्छी खासी शादी सिर्फ इसलिए दरक जाती है कि सुहागरात पर पति ने पत्नी को बहला–फुसलाकर उससे मेहर की रकम माफ करवा लेता है।

मेहर माफ करवाने के कारण फरजाना में असुरक्षा की भावना बढ़ जाती है। वह 'बडे बेबाक ढंग से एक सच्चे, समझदार पढ़े–लिखे मौलवी के माध्यम से कहानी की नायिका अपने द्वन्द्वों का समाधान खोजती नजर आती है।' 'मुस्लिम विवाह में मेहर सम्बन्धी अनेक समस्याएँ आती हैं। मेहर एक प्रकार की राशि या सम्पत्ति है, जिसे निकाह के अलक्ष्य में पत्नी–पति से प्राप्त करने की हकदार होती है, जिसके बिना कानूनी तौर पर निकाह जायज नहीं माना जाता। पत्नी सुरक्षा का मेहर शक्तिशाली हथियार है। मुस्लिम धर्म में तलाक की अधिकता के कारण और उससे बचने के लिए पति पर मेहर की राशि अधिक निश्चित की जाती है, किन्तु कुछ धोखेबाज मुस्लिम शौहर ऐसे होते हैं, जो सुहागरात में ही मेहर की रकम वापस करवा लेते हैं।'

'चार बहनें शीश महल की' इसमें शरीफ और उसकी चार लड़कियों की कहानी है। शरीफ की 'सुहाग स्टोर' नामक चूड़ियों की दुकान है। दादी को एक पोते की आस है, वह इन चारों लड़कियों से ख़ार खाती हैं। चारों लड़कियाँ भी दादी के खिलाफ मोर्चा बांधे रहती हैं। यह लड़कियाँ दुकान जलने के बाद दुकान के निर्माण में दादा और अब्बा के साथ रहती हैं। साम्प्रदायिक दंगों के दौरान एक हादसे में चारों बहनें बहादुरी से जूझते हुए मारी जाती हैं। कहानी में नालायक बेटों से लायक बेटियाँ भली–भाँति बड़े पुरजोर ढंग से साबित होती हैं। इस कहानी में बेटियाँ अपने अस्तित्व की लड़ाई खुद लड़ती हैं। वह किसी भी तरह लड़कों से कम नहीं हैं।

'इन्सानी नस्ल', ''नासिरा शर्मा ने 'इन्सानी नस्ल' नामक कहानी में आंतरिक संवेदना को व्यक्त किया है, जिसका सम्बन्ध यथार्थ और वास्तविकता से है। जीवन के कई फलक एवं सतह को संवेदनाओं के माध्यम से रेखांकित किया है। इन्सान से इन्सान की टकराहट में धर्म, भाषा, जात–पाँत की आड़ लेकर जो सतहीकरण है जरूर, मगर गहरे बंधते हैं। दूसरे वे कहानियाँ जो संवेदना के स्तर पर एक इन्सान से दूसरे को छलकर सुख प्राप्त करते हैं और दूसरे इन्सान को गहराने आहत

करती है और संवेदनाएँ किस तरह शुष्क हो भौतिक सुख में अपने करती भटक रही हैं।''[40]

'असली बात' कहानी में हिन्दु–मुस्लिम फसाद से पीड़ित निर्धन वर्ग की विडम्बना की बात करती है। फसाद के करण उत्पन्न परिस्थिति में निम्न वर्ग के लोगों की भूख को दर्शाया गया है।

'अग्नि परीक्षा' एक संवेदनशील कहानी है। इस कहानी की नायिका कम्मो को निर्दोष होते हुए भी अग्नि–परीक्षा देनी पड़ती है, किन्तु वह निडरता से अपने शत्रु पर उलटा वार कर उसी की जबान से अपनी पवित्रता का प्रमाण देती है। 'वही पुराना झूठ' की अनाथ जाहिदा विवाह के लिए ट्रेन से लाई गयी थी, किन्तु ट्रेन देर से आने के कारण लड़के वालों ने दूसरी लड़की के साथ अपने बेटे का विवाह कर दिया और जाहिदा जो अब गाँव लौट न सकी, दर–दर की ठोकरें खाने के लिए शहर में रूकने को बाध्य हैं।

बुतखाना 2012– इस संग्रह में कुल 29 कहानियाँ हैं जिसमें बारह लघु कथा हैं। नारी की जटिल मनोभूमि पर आधारित इन कहानियों में समाज के भिन्न–भिन्न नारी रूप का चित्रण है, इसमें से प्रायः सभी प्रेमिका, पत्नी, मित्र, पड़ोसी आदि रूपों में किसी न किसी छल और प्रवंचना की शिकार हैं।

'बुतखाना' यह कहानी नासिरा शर्मा की पहली रचना मानी जाती हैं जो 'सारिका' के नव लेखन अंक में सन् 1967 में छपी थी। यहीं से नासिरा शर्मा का लेखन आरम्भ माना जाता है। यह कहानी अपना अलग अस्तित्व रखती है। इसमें महानगरों के यंत्रवत जीवन का चित्र खिंचा गया है। दिल्ली जैसे बड़े शहर में आदमी की संवेदनाएँ मर जाती हैं। इंसानियत जैसे शब्द भी सुनने में अटपटे से लगते हैं। गाँव का सीधा–साधा रमेश दिल्ली की चमक–धमक में अपने आप को बिठा नहीं पाता है। एक अजीब छटपटाहट उसके अंदर है। वह केवल बुतखाने का बुत बनकर नहीं रहना चाहता है। 'नजरियाँ' कहानी में सबकी अपनी–अपनी सोच होती है, इसको दिखाया है। जैसा नजरिया होता है वैसा ही नजारा होता है।

---

[40] फातिमा शेख अफरोज, नासिरा शर्मा का कथा साहित्य वर्तमान समय के सरोकार, अतुल प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2012, पृ. 109

लड़की का अपना नजरिया है, तो लड़के का अपना हर किसी की सोच अलग होती है।

दूसरा ताजमहल (2002)– सात लम्बी कहानियों का संग्रह जिसकी सारी कहानियाँ अपने रंग की हैं, उनमें आपसी कोई अंतर्धारा नहीं बही है। इसमें इन्द्र धनुष जैसे सात रंग हैं जो साथ रहने पर भी अपना अलग वजूद रखते हैं। 'दूसरा ताजमहल' यह इस संग्रह की पहली कहानी है। इसी कहानी के नाम के आधार पर इस संग्रह का नामकरण किया गया है। कहानी लिखने से पूर्व उन्हें इस शीर्षक ने अभिभूत किया था। आज आदमी अपने वचन पर टिकता क्यों नहीं, जबकि लिखित रूप में ये कॉल करार होते हैं पहले ऐसा नहीं था। पहले जो बचन दिया जाता था उसके लिए प्राण तक दिए जाते हैं। 'प्राण जाई पर बचन न जाई'। नासिरा शर्मा ने इसे दाम्पत्य जीवन के संदर्भ में उठाया है। शाहजहाँ–मुमताज़ के मरने पर ताजमहल बनवाया था। मुमताज के साथ अपने दाम्पत्य को लेकर बादशाह इतना निष्ठावान था लेकिन क्या आज कोई पुरूष अपनी पत्नी या प्रेमिका के प्रति इतना निष्ठावान होता है। कहानी में नासिरा शर्मा का उत्तर न तो नकारात्मक है। इस कहानी की नायिका नयना को न तो पति का एक निष्ठ प्रतिबद्ध प्यार मिल पाता है न प्रेमी का।

संस्मरण

- 'यादों के गलियारे' (2009)

विविध

- 'जब समय बदल रहा हो इतिहास' (2010)–लेखिका द्वारा विभिन्न विधाओं पर लिखी उनकी .रचनाएँ एवं साक्षात्कार इत्यादि।
- 'सबसे पुराना दरख्त' (2005)
- 'किताब के बहाने' (2001)

किताब के बहाने

किताब के बहाने पुस्तक नासिरा शर्मा को सन् 2001 में प्रकाशित हुई। यह लेख हिंदी, उर्दू, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषा की चर्चित पुस्तकों पर लिखे हैं।

''नासिरा शर्मा ने 'स्वतंत्र भारत' के संपादक घनश्याम पंकज के अनुरोध पर

अपनी पसंद की किताबों पर समीक्षा लेख लिखने शुरू किए। ये समीक्षा लेख 'स्वतंत्र भारत' के रविवारी परिशिष्ट में 'किताब के बहाने' कालम में छपने लगे। पहला लेख अक्टूबर 1992 में शंकरदयाल सिंह की पुस्तक 'राजनीति की धूप और साहित्य का छांव' पर छपा। यह सिलसिला 1993 तक चला। अरसे बार इसी नाम से 1996 में वैचारिकी संकलन में दोबारा 'किताब के बहाने' शुरू किया। लेखिका का उद्देश्य कुछ और था। उनकी नजर कहीं और टिकी थी। उनके लिए मुद्दे अहमियत रखते थे, जिन पर वह बात करना चाहती थी। किताब उस लक्ष्य का बहाना मात्र बनी। इसी कॉलम के नाम पर पुस्तक का नाम रखा गया 'किताब के बहाने'।''[41]

यह विविध पुस्तकों पर लिखी आलोचना संग्रह है। इस किताब में कुल 24 लेख हैं। जिन्हें 5 भागों में बाँटा गया है। इतिहास, समाज, साहित्य, नारी और जीवनी। यह किताब अपने आप में विशेष महत्व रखती है। ''किसी एक किताब का फलक कितना विस्तृत हो सकता है। इसके उदाहरण ये लेख हैं? जो देशी और विदेशी लेखकों द्वारा सभ्यता, समाज, साहित्य, नारी और आत्मकथा जैसे विषयों पर लिखे गए हैं ये लेख सात सौ वर्ष पहले लिखी पुस्तक से लेकर 20वीं सदी के अंतिम वर्षों तक लिखी कृतियों से हमारा परिचय कराते हैं।''[42]

पहला लेख 'माली के मजार' है। यह उर्दू की पुस्तक है। इसके लेखक 'सिब्ते हसन' है। इस लेखक की शुरूआत में नासिरा शर्मा ने लिखा है। ''अजीब बात है, जब भी मध्यपूर्वी देशों का जिक्र आता है तो मन–मस्तिष्क में जो छवि उभरती है, वह एक बद्दू की है, जो रेगिस्तान में सफर करता, ऊँटनी का दूध पी कर जवान हुआ, एक जाहिल, जालिम इंसान बन जाता है, जिसको कठोर, कड़ी भौगोलिक परिस्थितियों के बीच पूरी तरह जुझारू बनकर जीना पड़ता है।''[43]

'मानव सभ्यता का विकास' डॉ. रामविलास शर्मा की किताब है। इस किताब की समीक्षा करते हुए इसी नाम का समीक्षा लेख में नासिरा जी लिखती हैं–''छोटे राष्ट्रों का कोई वजूद नहीं है। वे नाम के स्वतंत्र है और पूरी तरह दासता की

---

41 नासिरा शर्मा, किताब के बहाने, 2001, किताबघर प्रकाशन, नईदिल्ली, पृ. 9

42 नासिरा शर्मा, किताब के बहाने, 2001, किताबघर प्रकाशन, नईदिल्ली, फ्लैफ, पृ. 9

43 नासिरा शर्मा, किताब के बहाने, 2001, किताबघर प्रकाशन, नईदिल्ली, फ्लैफ, पृ. 14

जंजीरों में जकड़े हुए है। इस साजिशी शोषण से ईरान ने निकलना चाहा तो वहाँ पर रूढ़िवादी शक्तियाँ बैठ गई और जब अफगानिस्तान ने अपनी दशा सुधारनी चाही तो राष्ट्रीयता की भावना की जड़ धार्मिक मान्यताओं को जंजीर में कैद कर दिया गया।''[44]

तीसरा लेख स्टीफिन डब्ल्यू हांकिग की पुस्तक 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' की समीक्षा 'समय का लघु इतिहास' नाम से लिखी है।

फ्रांस के प्रसिद्ध मार्क्सवादी लेखक मैकसिम रॉड्रिसन की किताब 'मोहम्मद' (1960) की समीक्षा 'चुनौतियों का लेखक–राड्रिसन' नाम से नासिरा जी ने की है।

''इस किताब में तीन प्राचीन कानूनों का जिक्र है। सबसे पुराना कानून सल्तनत उर (दक्षिण इराक) के बादशाह उरनम्मू (नम्म देवी का गुलाम) का है। यह 2113–2096 ई. पूर्व में लिखा गया था। इसमें जान के बदले जान, आँख के बदले आँख नहीं, बल्कि जुर्माना अदा करना पड़ता था। दूसरा लिखित कानून 'अशनून्ना' की बादशाहत में प्रचलित था। यह बगदाद शहर के पूर्व में है, जहाँ चोरी करने, बलात्कार एवं बेवफाई की सज़ा मौत थी। यहाँ विवाह एक अनुबंध था। तीसरा कानून 'इसीन' के बादशाह लिपत अश्तर द्वारा प्रचलित था।''[45]

समाज से संबंधित 'हिंदुस्तानी समाज में मुसलमानों की समस्या (अशफाक खान), 'हमें जिन पर गर्व है' (द्रोपदी हरित), 'बंजारा जाति समाज और संस्कृति' (डॉ. जसवंत जाधव), और 'देश प्रेम और म.प्र. के आदिवासी (सुधीर सक्सेना) के पुस्तकों पर लिखे लेख हैं।

साथ ही इस पुस्तक में साहित्य से संबंधित पुस्तकें कृष्ण बलदेव वैद की 'चर्चित कहानियाँ' की समीक्षा करते हुए नासिरा जी कहती है कि ''वैद की कहानियाँ पहेली–सी लगती है। भाषायी चमत्कार है। उपमाओं की छटा है। इन कहानियों को पढ़कर लगता है कि वैद की अपनी एक जेहनी दुनिया है।''[46]

देवेन्द्र इस्सर की पुस्तक है। 'खुशबू बनके लौटेंगे', उसकी विधा निश्चित करना खुद लेखक के लिए भी मुश्किल है। नासिरा जी कहती हैं कि यह ''मेरे

---

[44] नासिरा शर्मा, किताब के बहाने, 2001, किताबघर प्रकाशन, नईदिल्ली, फ्लैफ, पृ. 21

[45] नासिरा : एक मूल्यांकन, सं. फीरोज अहमद, संस्करण 2016 पृ. 320

[46] नासिरा : एक मूल्यांकन, सं. फीरोज अहमद, संस्करण 2016 पृ. 75

ख्याल से एक इंसान की 'जेहनी यात्रा' की कहानी है जो अनुभव और चोट उसने इस भौतिक दुनिया में दिल व दिमाग के द्वारा हासिल की है उसका निचोड़ है।''[47]

बदीउज्जमा का उपन्यास है 'सभा पर्व'। यह आत्मकथात्मक है। 'घर के आंगन से इतिहास के गलियारे तक' नाम से नासिरा शर्मा ने इसकी समीक्षा की है। शंकरदयाल सिंह की राजनीति की धूप, साहित्य की छाँव, नजीर बनारसी की राष्ट्र की अमानत राष्ट्र के नाम, रामबहादुर सिंह भदौरिया की 'गीत ही मेरी उमर है, बलदेव वंशी की किताब 'बोतल में बंद जिन्नत' और खलील जिब्रान की 'द ग्रेटेस्ट वर्क्स और जिब्रान' इस पुस्तकों पर लिखी समीक्षाएँ हैं।

नारी संबंधित पुस्तकों पर भी इससे कुछ समीक्षाएँ मिलती है। इससे एम.ए. अंसारी की 'नारी चेतना और अपराध, रीना निसिम की 'नेच्युरल हिलींग इन गायनेकालॉजी' प्रेमकृष्ण शर्मा की 'यत्रवस्तु' और कात्यायनी की 'विश्व के दुर्गद्धार पर दस्तक' का समावेश हुआ है। उसके साथ ही नासिरा शर्मा ने किश्वर नाहिद की 'कहानी एक बुरी औरत की', फदवा तूफान की 'पहाड़ी रास्ता', बेढब रास्ता, हसन निजामी की 'निजामी बंसरी के चालीस दिन' और रिफअत सरोझ की 'सुरमई कबूतर और पत्ता–पत्ता', बूहा–बूहा इन जीवनियों पर भी समीक्षा लिखी है।

इन लेखों के बारे में नासिरा शर्मा कहती हैं, ''किताब के बहाने कॉलम लिखने की प्रेरणा के पीछे केवल मेरी बेचैनी नहीं बल्कि मेरी इन बनती सोच का भी योगदान था कि मैं अपने आसपास लिखी जा रही रचनाओं पर टिप्पणी हूँ।''[48]

अन्य

- टी.वी. फिल्म, नासिरा शर्मा
- माँ
- तड़प
- आया बसंत सखी
- काली मोहिनी
- सेमल का दरख्त

---

[47] नासिरा : एक मूल्यांकन, सं. फीरोज अहमद, संस्करण 2016 पृ. 86–87

[48] किताब के बहारे, फ्लैफ

- बावली
- सीरियल
- वापसी
- सरजमीन
- शाल्मली
- बाल साहित्य

बाल साहित्य

हिंदी भाषा–साहित्य में बाल साहित्य की परंपरा अत्यन्त प्राचीन है। वेद, रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाओं, बौद्ध कथाओं, वृहत्कथा, सिंहासन द्वतिशिका इत्यादि में बच्चों के लिए रूचिकर और ज्ञानवर्द्धक प्रसंग बहुतायत में है।

बाल साहित्य की इस वृहत परम्परा में नासिरा शर्मा का योगदान महत्वपूर्ण है। नासिरा शर्मा के तीन लघु उपन्यास हैं। इन उपन्यासों में बच्चों के लिए जिज्ञासा, मनोरंजन के साथ सामाजिक संदर्भों में सोद्देश्यता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

बदलू

'बदलू' के प्रस्तुत उपन्यास का केन्द्रीय विषय पानी की समस्या पर आधारित है। वास्तव में उनके उपन्यास कुइयाँजान के बाल चरित्र को अलग से उठाकर उसे बच्चों के लिए उपन्यास का रूप दिया है। पानी की समस्या वर्तमान में न केवल भारत, अपितु संसार की ऐसी ज्वलंत समस्या है, जिसके प्रति अगर समय रहते हुए सचेत न हुआ गया तो अंतहीन होकर विकास की गति को न केवल बाधित कर देगी, अपितु मानवता के लिए एक भयंकर खतरे के रूप में उपस्थित होगी। यह मात्र कल्पना नहीं, इसका आभास होने भी लगा है। अभी से ही स्थितियाँ इतनी भयावह हो रही हैं कि मुर्दों को अंतिम क्रिया से पहले स्नान कराने के लिए भी इसकी किल्लत होने लगी है। उल्लेखनीय यह है कि उपन्यास में केवल इसकी भयानकता का चित्रण नहीं, बल्कि इसके हल के संदर्भ में आदिम और सहज

प्रक्रिया का संकेत भी है।

'बदलू' अनाथ बालक है। पहले तो मौलवी साहब का सहारा बनता है। उनकी मृत्यु के बाद खुर्शीद आरा के परिवार में आकर रच–बस कर बुआ के ममत्व की प्यास को तृप्ति प्रदान करता है। प्यासों, परिंदों और जानवरों के लिए पानी की व्यवस्था करता है। डॉक्टर के क्लीनिक में मरीजों का दिल बहलाता है और अंत में असमय माँ की मृत्यु के बाद पराग और पंखुरी को पालता है।

दिल्लू दीमक

'दिल्लू दीमक' उपन्यास बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। एक तरफ इसमें खेल–खेल में बच्चों को शिक्षित करने की प्रक्रिया का उद्‌घाटन है तो दूसरी तरफ यह बाल मन की उन गुत्थियों पर भी प्रकाश डालता है जिसके तहत बच्चा अपने छोटे भाई–बहन के प्रति बैर भाव से संचकित होने लगता है। वफा, अमन और आबिद ऊपर नीचे के बहन भाई है। वफा बड़ी है। अमन के पैदा होने पर वह उसको फूटी आँख नहीं सुहाता है। यही स्थिति अमन को आबिद के पैदा होने पर होती है। दरअसल छोटे बच्चों को नए भाई–बहन के आ जाने पर लगने लगता है कि वह उसका हक ले रहा है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि नैसर्गिक रूप में परिवार के साथ माँ के केन्द्र में छोटा बच्चा अपनी कोमलता और उसकी आवश्यकता के कारण अधिक रहता है। अतः रचनाकार का मानना यह है कि अंत में बच्चों के समझदार होते–होते सब कुछ सामान्य होने लगता है।

भूतों का मैकडोनल

'भूतों का मैकडोनल' का उल्लेखनीय तथ्य यह है कि प्रस्तुत उपन्यास में 'बदलू' और 'दिल्लू दीमक' की अपेक्षा मनोरंजन का तत्व अधिक है। यद्यपि इसका विषय भी गंभीर और लक्ष्य सोद्‌देश्य है। कथा के केन्द्र में घुँघरू गाँव की आकार लेती पाठशाला और उसके पाँच शरारती बच्चे हैं। बच्चे पढ़ने में तो होशियार है। लेकिन शरारती है। अमरूद और आमों की चोरी, मीठे रसीले फल और शहद की खोज में धूप दोपहरी में भटकते ग्रामीण परिवेश की स्वाभाविकता जीवन चर्चा के साथ जीते हैं। तभी उनमें से एक बच्चे को शहर में जाने का अवसर मिलता है। वहाँ के रहन–सहन, खान–पान से प्रभावित होकर वापस गाँव में आता है तो शहरी जीवन की नकल करता है। उसके साथी उसका साथ निभाते है। फिर वही हरकतें,

जो गुदगुदाती है, अब वीभत्स हो जाती है। मैकडोनल के पिज्जा, बर्गर और मुर्गे की टांग की नकल में कच्चे–पक्के फल, रामदाना हो या साग खाने वाले बच्चे मासूम परिंदों को मारने के बाद भूनने लगते हैं। यह प्रकृति यद्यपि अविश्वसनीय प्रतीत होती है, परन्तु भविष्य में नई पीढ़ी के समक्ष दरपेश खतरे का संकेत अवश्य करती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि तीनों उपन्यासों बाल मनोविज्ञान के धरातल पर कथ्य के विकास के रस में शिक्षा, सफाई, अंधविश्वास, जीवन और समाज के उन बुनियादी प्रश्नों को भी अपनी जद से बाहर नहीं जाने देते जो आठ साल के बच्चों से लेकर अस्सी वर्ष तक के बूढ़ों के जीवन संदर्भों से संपृक्त है।

बाल साहित्य में वे लोककथाओं के आधार पर भी लिखती रही हैं। 'बाज की नजर' फारसी लोककथा पर आधारित है वहीं 'अंधार पत्थर' 'अरेबियन नाइट्स' पर आधारित है।

- संसार अपने अपने (2012) कहानी संग्रह
- दर्द का रिश्ता व अन्य कहानियाँ (2011)
- गुल्लू (2005)

संपादन

- वर्तमान साहित्य पत्रिका (महिला विशेषांक) 1994
- सारिका (सन् 1981) : ईरानी क्रांति विशेषांक
- पुनश्च पत्रिका : ईरान विशेषांक

नासिरा जी का सृजनात्मक लेखन हिंदी साहित्य में विशेष स्थान रखता है। इनकी कथा यात्रा 'बुतखाना' कहानी से प्रारंभ हुई और बाद में कई वृहद् उपन्यास और कथा संग्रहों के साथ अभी भी जारी है।

किस्सा जाम का

इस कहानी संग्रह की सभी 37 कहानियाँ ईरान की लोक संस्कृति पर आधारित है। 'किस्सा जाम का' पहला संस्करण 1977 में आलेख प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह के बारे में सैयद अमीर आबिदी कहते हैं कि ''अनगिनत पीढ़ियों से बहती हुई सरिता की तरह, लोक कथाएँ, उस जन समाज

की, जो कि एक क्षेत्र विशेष में फला और फूला है। आधारभूत विचारधाराओं, सभ्यता तथा संस्कृति का प्रतीक है। खुरासन की प्रस्तुत लोककथाएँ उस क्षेत्र का, जो ईरान की सभ्यता और संस्कृति में बेजोड़ रहा है, एक दर्पण है।''[49]

नासिरा कहती हैं–जब इन दोनों देशों की लोक–संस्कृतियों की समानता ईरान में वहाँ की लोककथाओं में नजर आई तो मेरा कथाकार मन पुनः सृजन के लिए व्याकुल हो उठा। ईरान की खुरासानी बोली से हिंदी में अनुवाद करते वक्त नासिरा शर्मा ने रचना एवं मुहावरों को पकड़े रखा है। लेखिका के शब्दों में भारत और ईरान सभ्यता एवं संस्कृति की दृष्टि से एकचने की दो दालें हैं। इस संग्रह की कुछ कहानियाँ या यूँ कहें कि किस्सों के शीर्षक हैं। कहानी एक बेल की, बद से बदतर, डरपोक देव, सम्मानित, बुद्धिमान, लोमड़ी, सोने के अंडों वाली मुर्गी, मूलचनकरे, चालीस चाबियाँ, तीन नारंगियों की कहानी, राह व नीमराह।

लेखिका कहती हैं कि ''यह पूरी किताब तीन तरह के किस्सों में बंटी हुई ही एक भाग में दर्शन का चिंतन है। दूसरे भाग में राजाओं के माध्यम से सांसारिक व्यावहारिकता का ज्ञान है और तीसरे किस्से वे हैं जो मूलतः परिंदों व हब्शियों से संबंधित हैं। जिसके द्वारा यह बताया गया है कि धरती का सबसे शक्तिशाली और महिमामय प्राणी 'मनुष्य' है। जो दुस्कर से दुस्कर, कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपनी विजय पताका लहराता है। केवल एक किस्सा जानवरों पर आधारित है जिसमें रोचकता के साथ ही व्यंग्य का पुट है।''[50]

- गिल्लोबी (2000)
- पढ़ने का हक (1999)
- धन्यवाद, धन्यवाद
- एक थी सुल्ताना (2005)
- सच्ची सहेली (1999)

अनुवाद

---

[49] किस्सा ज्ञान का, नासिरा शर्मा, प्रथम संस्करण आलेख प्रकाशन, वी–8, नवीन शाहदरा, दिल्ली, पृ. 7

[50] किस्सा ज्ञान का, नासिरा शर्मा, प्रथम संस्करण आलेख प्रकाशन, वी–8, नवीन शाहदरा, दिल्ली, पृ. 11

- वियतनाम की लोककथाएँ (1975)
- किस्सा जाम का (1978), खुरासान की लोककथाएँ फारसी से हिंदी पोयेम आफ प्रोटेस्ट आफ ईरानियन रेवेलूशन (1979) चार भाषाओं में क्रांतिकारी कवियों की कविताएँ
- काली छोटी मछली (1984) समद बहरंगी बालसाहित्य लेखक की कहानियाँ.
- शाहनामा फिरदौसी (1990) ग्यारह कहानियों का अनुवाद
- बर्निंग पायर (1995) अंग्रेजी में, क्रांतिकारी की सईद सोल्तानपोर
- अदब में बाई पसली (शीघ्र प्रकाशित) छः खण्डों में अरबी, फारसी, फारसी दरी एवं उर्दू भाषाओं के महत्वपूर्ण लेखकों, कवियों, नाटककारों इत्यादि का अनुवाद।
- गुलिस्ताने सादी (शीघ्र प्रकाशित)
- वियतनाम की लोककथाएँ (1985)

सम्पादन व अनुवाद

- क्षितिज पार (1988)
- सारिका का ईरानी क्रांति विशेषांक (1981)
- पुनश्च पत्रिका का ईरानी क्रांति विशेषांक (1982)
- वर्तमान साहित्य का महिला विशेषांक (1994)
- मेरे वारिस (शीघ्र प्रकाशित), नये लेखकों की कहानियों का संग्रह 6. प्रवासी हिंदी लेखकों का कहानी संग्रह (शीघ्र प्रकाशित)

नाटक

- सबीना के चालीस चोर (1995)
- दहलीज–देवराज अंकुर (2000)
- पत्थर गली–डायरेक्टेड बाई दिनेश खन्ना (2000)
- इब्ने मरियम–डायरेक्टेड बाई दिनेश खन्ना (2007)
- साधना–डायरेक्टेड बाई राजीव रंजन एवं डाक्यूमेंट्री

इराक में ईरानी युद्धबंदी किशोरों पर बनी फिल्म जो फ्रेंच टीवी के पत्रिका

मैगजीन में 7 मिनट की दिखाई गई थी उसे फ्रेंच टीवी पत्रकार फिलिप शैन्थले ने लेखिका द्वारा बच्चों से लिये गये साक्षात्कार पर आधारित बनाई थी। 1983 में पेरिस में दिखायी गई जिसके बाद ईरानी सरकार जो इस सच से इंकार कर रही थी कि वह हमारे बच्चे नहीं है। उन्हें सौ बच्चों को वापस बुलाना पड़ा।

दूसरी फिल्म (1985) जर्मनी टेलीविजन के लिए पत्रकार नवीना सुंदरम् ने बनायी थी जिसमें बाकी के युद्धबंदी जो रमादी कैंप में मौजूद थे। उन पर बनी थी। उसका गहरा प्रभाव देखने वालों पर पड़ा था।

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार

अंतर्राष्ट्रीय इस्लामिक सेमिनार युद्धबंदी की अपील के लिए (1983) जिसमें विदेशी, पत्रकारों, राजनेताओं और मौलवियों से अकेली 'औरत पत्रकार' के रूप में लेखिका उपस्थित थी। दूसरा, तीसरा और चौथा अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन जिसमें लेखिका की उपस्थिति थी। वहाँ पर लिये गये महिलाओं से साक्षात्कार लेखिका की पुस्तक 'मरजीना का देश इराक' एवं 'औरत की आवाज' में दर्ज है।

रिपोर्टिंग

- ईरान रेवुलेशन 'हिन्दुस्तान टाइम्स अंग्रेजी' (1979)
- परोब पत्रिका दिल्ली अंग्रेजी (1980–1983–1984)
- मिडिल ईस्ट लंदन (1984)
- एशिया वीक अंग्रेजी (1981–1982)
- अरेबिया अंग्रेजी पत्रिका लंदन (1985)
- भूतपूर्व राष्ट्रपति पाकिस्तान ज़ियाउल्हक की मृत्यु पर पाकिस्तान से रिपोर्ट भेजी गई नईदुनिया, नईदिल्ली (उर्दू डेली 1988)
- हिरोशिमा विश्वविद्यालय द्वारा राजस्थान के गाँवों पर चल रहे शोध में महिला स्थिति पर रिपोर्ट (1995)
- ईरान–इराक युद्ध का आँखों देखा हाल (1983–1984)
- दस्तकार औरतें, चिकन कारीगर बी.बी.सी. लंदन जिलियन राइट ब्रिटिश पत्रकार के साथ लखनऊ (1988)

- परिंदों को पिंजड़े में रखने एवं दरियागंज मुर्गा मार्केट बी.बी.सी. रिपोर्ट (1993)

प्रेमकथा

प्रेमकथा पुस्तक सन् 2001 में प्रकाशित हुई। ईरानी एवं मध्यपूर्वी देशों के विशेषता के रूप में जानी जाने वाली नासिरा शर्मा ने इसमें ईरानी के प्रसिद्ध क्रांतिकारी एवं सफल साहित्यिक समद बहरंगी की कहानियों का हिंदी में अनुवाद किया है। इस संग्रह में काली छोटी मछली, एक आडू और हजार आडू, 24 घंटे सोते जागते, नारंगी का छिलका, चुकंदरवाला, प्रेमकथा, दोमरूल, दीवारें सर, आकाश की तलाश, आदी और बूदी, अनाम, सफेद दाढ़ीवाला, बकरा, भेड़ और भेड़िया, भूखा चूहा, दो बिल्लियाँ, दीवार पर, सोने का चूना और आत्मकथा बर्फ के गोले की, ये सोलह अनुदित कहानियाँ सम्मिलित है। ये सभी कहानियाँ मूल फारसी में लिखी हैं। नासिरा शर्मा ने इन कहानियों का अनुवाद इतनी कुशलता से किया है कि सभी कहानियाँ हिन्दी की ही लगती हैं। कहानियों को पढ़कर कहीं भी नहीं लगकता कि ये फारसी की है। उन्होंने कहानियों का अनुवाद करते समय मूल भाव को पूर्णतः सुरक्षित रखा है।

लेख संग्रह

राष्ट्र और मुसलमान नासिरा शर्मा की वैचारिक पुस्तक 'राष्ट्र और मुसलमान' (2002) में प्रकाशित एक मौलिक संग्रह है। जो भारतीय समाज को अंतर्राष्ट्रीय शांति की ओर ले जाती है। आज जब सम्पूर्ण विश्व मुसलमानों को एक समस्या के रूप में देख रहा है। ऐसे में इस किताब में लेखिका ने मुस्लिमों से संबंधित विविध विषयों पर लगभग 35 लेख लिखे हैं। नासिरा शर्मा अपनी पुस्तक 'राष्ट्र और मुसलमान' की भूमिका में कहती हैं–''समय की छाती पर खड़ा मुसलमान आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है। 'मुसलमानों' को लेकर इतना कुछ कहा जा रहा है कि स्वयं मुसलमान भी इस चर्चित मुसलमान के बारे में नई–नई सूचनाएँ सुनने की जिज्ञासा रोक नहीं पाता है।''[51] लेखिका कहती है कि एक भारतीय की तरह मैंने ''मुसलमान को कैसा देखा, परखा, महसूस किया। इसलिए मेरी इस

---

[51] नासिरा शर्मा : राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, 48855–56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नईदिल्ली, पृ. 6

किताब में 'मुसलमान एक आम आदमी की तरह अपनी खूबी और कमजोरी के साथ मौजूद है। वह स्वयं अपनी बात करने में सक्षम है। इसलिए वह किसी बड़े नाम के सहारे या धार्मिक नेताओं के बल पर आगे नहीं बढ़ता है। जो सच है, वह सामने है। लेखिका ने पहली बार आम मुसलमानों के चेहरे से नकाब हटा बीच की दीवारों को गिरा बहुत कुछ वह कह सकी, जो सच हम सबका है। मुसलमान एक सच, राष्ट्र और मुसलमान (चार भाग), हम छीन लेंगे आजादी, कश्मीर में क्रांति भारत से दोस्ती, भारतीय नीति में बदलाव की जरूरत, पाकिस्तान से रिश्ते का मतलब, धर्म समाज और विकास, शिक्षा, कानून और आम आदमी, भारतीय समाज में मुसलमान। औरत–मर्द–संबंध का सच। लेखिका कहती है। वे लेख मेरे अनुभव का साक्षी है। इसलिए अंत में इस नतीजे पर पहुँची कि एक भारतीय की तरह मैंने मुसलमान को कैसा देखा, परखा, महसूस किया, उसका ब्यौरा देना ही मेरी सीमा होनी चाहिए। ताकि अपने यथार्थ की पूर्ति पर खड़ी होकर जब में कुछ कहूँ तो उसमें खरेपन की टनटनाहट हो।''[52]

लेखिका ने मुस्लिम औरतों का पक्ष लेते हुए मुस्लिम औरत धर्म और विश्वास, मुस्लिम और साम्प्रदायिक दंगे में लेख लिखे हैं। मुस्लिम स्त्रियों का पक्ष लेती हुई लेखिका कहती है कि ''शताब्दियों से मुसलमान औरत अपनी कमजोरियों, अशिक्षा, बेजा भय से अत्याचार का शिकार होती आई हैं। और इस पीड़ा को ही अपनी नियति और इस्लाम धर्म को नीति मानकर सब कुछ सहती रहती है। जहाँ रही, वहीं के भेष में अपने को ढालने की कोशिश की और सबको खुश रखने में अपने औरत होने की सार्थकता समझी।''[53]

'सूरा–ए–कुरान' और 'मानव जाति' शीर्षक के अंतर्गत नासिरा शर्मा ने वह अंधा कुँआ कहाँ है, धर्म : पोषण या शोषण, अधूरे विधेयक ने बना दिया तिल का ताड़, मेहर की मेहरबानी कब तक, कुरान–ए–करीम का संबोधन पूरी मानव जाति से है। शरीयत अदालत, संविधान के खिलाफ है, आज मुझे औरतों का सबसे ज्यादा

---

[52] नासिरा शर्मा : राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, 48855–56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नईदिल्ली, पृ. 7

[53] नासिरा शर्मा : राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, 48855–56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नईदिल्ली, पृ. 8

समर्थन प्राप्त है। पढ़ी–लिखी औरत भी कहाँ आजाद है, बात, सिर्फ शाहबानों की नहीं, अधिकार पाने की है। ये सभी लेख संग्रहीत है। उर्दू साहित्य में संबंधित दो लेख मुसलमान औरत : स्थिति, अस्मिता और अबद और स्त्री अभिव्यक्ति की प्रथम विधा : रेखती है। इसके अतिरिक्त लेखिका ने प्रेम की कोई भाषा नहीं, मुस्लिम राष्ट्र एवं हिंदू मानसिकता, भारत एवं अरब देशों के प्राचीन संबंध, भारतीय मुसलमानों के आपसी संबंधों का ताना–बाना, विश्व मानचित्र पर भारतीय मुसलमान, न सूखने वाले आँसुओं के दाग, भारतीय मुसलमानों की सोच की डगर इत्यादि लेख संग्रहीत हैं।

इन लेखों के माध्यम से नासिरा जी ने भारतीय मुसलमान की स्थिति, मानसिकता, स्त्रियों की स्थिति एवं अनेक समसामयिक समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है। आज आवश्यकता है कि भारत में शिक्षा का व्यापक प्रचार एवं प्रसार हो तथा आर्थिक एवं सामाजिक समानता का लक्ष्य प्राप्त किया जाए। सुख और समृद्धि के लिए शांति आवश्यक है और इस शांति का मार्ग नासिरा शर्मा के शब्दों में निम्न प्रकार है–

''यह जिम्मेदारी देश के जवान माँ–बाप पर है कि वे अपने नए जन्मे बच्चे को ऐसा संस्कार दें, जो वह पहले हिंदुस्तानी बने, बाद में हिंदू, मुसलमान। इससे दंगे–फसाद खत्म होंगे। मगर हाँ, एक वर्ग को भारी हानि उठानी पड़ेगी। जो 'बांटो और राज करो' की नीति अपनाकर दूसरों की सुरक्षा शांति जान–माल की कीमत पर अपनी जेबें भरते हैं। उनके लिए जरूरी है कि वे अब नया काम–धंधा तलाश करे और मेहनत की रोटी कमाने पर विश्वास करे और दूसरों का गला काटना और कटवाना बंद करे। बस अब बहुत हो चुका।''[54]

औरत के लिए औरत (2003)

सन् 2003 में प्रकाशित इस लेख संग्रह में स्त्री विचारधारा को अभिव्यक्ति दी गई है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखिका के मन में व्यापी यह संवेदना सहज ही आकर्षित कर लेती है कि औरत अधिक ईमानदार, निष्ठावान, कर्मठ, धर्मज्ञान और बलिदान करने को सदा तत्पर रहने वाली एक ऐसी जीव है जिसका मुकाबला

---

[54] नासिरा शर्मा : राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, 48855–56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नईदिल्ली, पृ. 92

दुनिया का दूसरा कोई प्राणी नहीं कर सकता है। लेख यद्यपि स्त्री–विमर्श पर लिखे लेख हैं। परन्तु उनमें इकहरी दृष्टि एवं कुंठित मानसिकता का लोप है। जिसके कारण स्त्री एक ऐसा बुनियादी मुद्दा बनकर उभरती है। जिसके चारों तरफ राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्मशास्त्र, कानून व्यवस्था, समाज परिवार इत्यादि। विश्वस्तर पर जवाबदेह नजर आते हैं। विकास और उन्नति पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए समय का वह चेहरा सामने लाते हैं। जिसमें स्त्री पूरी की पूरी लहूलुहान नजर आती है। उसके बूते पर मानवीय समाज कौन–कौन–सी शतरंज की बाजी लगातार खेलना चाहता है और जीत का कौन–सा पदक प्राप्त करना चाहता है। इन लेखों में जीवन की आंच भी है और आस भी कि स्वयं नारी अपने प्रति होते हुए अत्याचारों और शोषण का रुख बदलेगी। नासिरा शर्मा स्वयं कहती हैं–''औरत को लेकर जो संवेदना मेरे अंदर उपजी थी उसका प्रभाव मुझे समय–समय पर अपने कटे–लिखे शब्दों द्वारा होता था कि औरत अधिक ईमानदार, निष्ठावान, कर्मठ, धैर्यवान, बलिदान करने वाली एक ऐसी जीव है जिसका मुकाबला दुनिया का दूसरा प्राणी नहीं कर सकता है। औरत को लेकर आदर–भरा सम्मान मेरे मन–मस्तिष्क में इस तरह जड़ जमाकर बैठ गया था कि मैं उन औरतों को औरत समझने की ही तैयारी न होती जिनमें यह गुण मौजूद न होते। मेरे अंदर औरत की एक ऐसी ठोस प्रतिमा आकार ले चुकी थी जिसको माँ ने गढ़ा था।''[55]

इस लेखक के संबंध में डॉ. कमलेश सचदेव जी कहते हैं–'' 'औरत के लिए औरत' शीर्षक की तरह पूरी पुस्तक में फेमिनिस्ट आंदोलन के सार्वभौमिक बहनापे का स्वर निहित है। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था स्त्री को ही स्त्री के सामने खड़ा कर सपने वर्चस्व को यह कहकर बनाए रखने में सफल होती रही है कि स्त्री ही स्त्री की शत्रु है। स्त्रीवादी आंदोलन ने इस तथाकथित मनोवैज्ञानिक तथ्य की राजनीति को पकड़ा है और व्यक्तिगत की राजनीतिकता को सामने लाते हुए स्त्री को स्त्री की सहज मित्र के रूप में स्थापित किया है। रैडिकल फेमिनिस्ट तो इस दिशा में समलैंगिकता तक पहुँच गई है। नासिरा शर्मा ने स्त्री को अपने को पहचानने, अपना दायरा बढ़ाने, अपनी मुक्ति कामना का प्रसार पूरे समाज तक करने

---

[55] औरत के लिए औरत, भूमिका, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015 पृ0 164

और औरत द्वारा औरत की संवेदना तथा सहारा देने की बात इस पुस्तक के अनेक लेखों में कही है। महिला संस्थाएँ, सहकर्मी महिलाएँ, एक–दूसरे के अवकाश को सृजनात्मक कार्यों से भरती धनाढ्य महिलाएँ सार्वभौमिक बहनापे के ही विभिन्न रूप हैं।'' ''विश्वास का एक नया घेरा महिलाओं के बीच अपना स्थान बना रहा है, जो इस बात को झूठा साबित करता है कि औरत, औरत की दुश्मन हो सकती है। अब दौर है पास्परिक सहानुभूति, सहायता एवं विश्वास देने का, जो कई रूप में हमारे सामने खुलकर आ रहा है।''[56]

स्त्री अब जान गई है कि असुरक्षा की भावना है। उसे दूसरी स्त्री के विरुद्ध खड़ा करती है। जैसे–जैसे वह असुरक्षा की भावना से मुक्त हो रही है, दूसरी स्त्री की मित्र बन रही है और ''हमारा दोष स्त्री के लिए मढ़कर जो पति परमेश्वर सुख का जीवन व्यतीत कर रहे थे, वे अब औरतों के मुखर होने से घबरा उठे हैं। उनकी गलतियाँ छुपाने वाले स्वयं गलतियों का खुलासा करने लगे हैं।''[57]

वह एक कुमारबाज थी (2010)

लेखिका द्वारा अपने उपन्यासों का रचना प्रक्रिया एवं आत्मतर्पण (हंस, 1990) शामिल है। नासिरा शर्मा की 'वह एक कुमारबाज थी' इस शून्यता को भरने का प्रयास मात्र नहीं बल्कि हिंदी साहित्य में नवीन विधा के रूप में एक नई परम्परा का प्रारंभ भी है। समीक्षा कृति के पहले आत्मवृत्तात्मक आलेख 'वह एक कुमारबाज थी' में लेखिका ने दूसरों की नजरों से स्वयं को देखा है। स्वयं को दूसरों की दृष्टि से देखने और उनके विचारों को नासिरा ने सेंसर न कर बेबाकी से बयां किया है। इस आलेख में केवल नासिरा के व्यक्तित्व का विश्लेषण ही नहीं वरन् आत्मकथा के बहाने रचना, समाज, राजनीति और साहित्य के समीकरणों, अंतर्विरोधों, नंगी सच्चाई और इनमें व्याप्त, टुच्चेपन के साथ समाज के वृहत्तर सरोकारों से रूबरू होती है।

औरत की आवाज (2010)

विभिन्न देशों की महत्वपूर्ण लेखिकाओं कवयित्रियों एवं राजनेताओं से साक्षात्कार और लेख एवं स्वयं लेखिका से लिए गए साक्षात्कार।

---

[56] औरत के लिए औरत, भूमिका, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015 पृ0 165

[57] औरत के लिए औरत, भूमिका, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015 पृ0 166

रिपोर्ताज

जहाँ फौव्वारे लहू रोते हैं (2003)

ईरान की क्रांति व अन्य देशों पर लिखे रिपोर्ताज इस संग्रह में है। स्वयं नासिरा शर्मा के शब्दों में, ''यह सारे रिपोर्ताज जो पिछले पच्चीस वर्ष (1976–2003) के लिखे गए हैं। जब ईरान के सोए आतिश–कदे लोगों के दिल व दिमाग में सुलग रहे थे, जमीन पानी की जगह खून उगलने लगी थी। सूरज सजा नेज़े पर पहुँच गया था। माहौल कुछ इसी तरह का बन गया था कि घटनाएँ इतिहास बनकर अपनी रिपोर्टिंग खुद लिख रही थी। आतंक और अंकुश भाषा शैली का नया मुहावरा गढ़ रहे थे जिसमें बहुत कुछ अनकहा घटने के बावजूद बहुत कुछ दर्ज हो रहा था। संकेत भरी अभिव्यक्तियों के बीच इंसान से ज्यादा मुद्दे महत्वपूर्ण हो उठे थे।''[58]

रिपोर्ताज को सांसारिक और मानवीय संकटों के सिस्मोग्राफ भी कहा जाता है क्योंकि रिपोर्ताज की उपज युद्ध और अकाल की विभीषिका है। नासिरा शर्मा ने पहली बार इसे एक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण काम किया है।

इस संबंध में सत्यनारायण जी कहते हैं–'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं', में कुल अठारह खण्ड हैं हालाँकि इन अठारह खण्डों को लेखिका ने अपनी अठारह यात्राओं के रूप में देखा है और इन्हें यात्रावृत्त भी कहा है। लेकिन मूलतः ये वैसे यात्रावृत्त नहीं है जिस तरह एक पर्यटक शौकिया तौर पर देखता है। ये मुख्यतः मानवीय सिस्मोग्राफ है जिनके माध्यम से पाठक वहाँ के आवाम के हाल जान सकता है। इस यात्रा के पड़ाव में पहले खण्ड से शुरू हुई यात्राा किस तरह एक साथ जीवन के कितने दुरूह खण्डों की यात्रा बन जाती है, यह इन्हें पढ़ते हुए बराबर महसूस किया जा सकता है। ईरान कितना खूबसूरत होगा, हमारे वहम गुमान में भी न था। चिनार के घने दरख्तों की छाया में पड़ी काली चौड़ी सड़कें और वृक्षों की जड़ों से बहता शफक़ ठंडा अलर्वुन पर्वत की बर्फ का पिघला पानी किसी पेंटिंग की तरह लगता था। एक खूबसूरत ग़ज़ल की तरह का ईरान कालांतर में किन–किन

---

[58] नासिरा शर्मा, जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण–2013

त्रासदियों के बीच से गुजरा, इसकी यथार्थ अभिव्यक्ति इन रिपोतार्जों में हुई है।[59]

विशेष अध्ययन

- अफगानिस्तान बुजकशी का मैदान (1990), अफगानिस्तान क्रांति, राजनीति, संस्कृति, साहित्य एवं विभिन्न महत्वपूर्ण लोगों से साक्षात्कार (दो खण्डों में)
- मरजीना का देश इराक (2003) भूतपूर्व राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन का समय और अमेरिकन हमले की विवेचना, विभिन्न महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कार के साथ।

साहित्य एवं पत्रकारिता के इतर टीवी साक्षात्कार लेखिका द्वारा

- कवि असगर अली फारसी कवि (कुबेरदत्त)
- पाकिस्तानी कवयित्री किश्वर नाहीद प्रोड्यूसर किरण सिन्हा (1984)
- लेखिका शिवानी प्रोड्यूसर विमल इस्सर
- लेखिका मन्नू भण्डारी प्रोड्यूसर विमल इस्सर
- जफर सैफउद्दीन (माइनारिटी कमीशन) शहनाज युसुफजई
- इश्तियाक मुहम्मदखान डायरेक्टर प्रोड्यूसर शमीम अस्मत
- अश्फाक मुहम्मदखान (उर्दू प्रोड्यूसर) डायरेक्टेड शमीम अस्मत
- अत्रा सुवेवारा रूसी लेखिका दिल्ली, दूरदर्शन
- सच की परछाईयाँ डायरेक्टर एण्ड प्रोड्यूसर विमल इस्सर

निष्कर्ष–

नासिरा शर्मा जी हिन्दी कथा साहित्य की उभरती हुई श्रेष्ठ लेखिकाओं में से एक है। उन्हें बचपन से ही लेखन कार्य में गहरी रूचि थी। इनको अपने परिवार और परिवेश से साहित्य सृजन की प्रेरणा मिली अर्थात् नासिरा शर्मा जी के कृतित्व में उनका प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। उनका साहित्य बहुआयामी रहा है। उच्च शिक्षित, आधुनिक सोच, विभिन्न देशों की यात्रा करने के बावजूद भी नासिरा शर्मा जी अपनी भारतीय संस्कृति एवं संभ्यता नहीं भूली, किन्तु गलत परम्परा, रूढ़ियों एवं

---

[59] नासिरा शर्मा : शब्द और संवेदना की मनोभूमि, सं. ललित शुक्ल, संस्करण–2006 पृ. 319

अन्धविश्वासों को नहीं मानती है। नासिरा शर्मा जी का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान गजब का है। इनका साहित्य इतना प्रचुर और विविध वर्णी है कि विश्वास नहीं होता है कि पारिवारिक दायित्वों एवं सामाजिक कठिनाईयों के बाद भी इतना सबकुछ कैसे लिख लेती है। उपन्यास, कहानी के अतिरिक्त इन्होंने बाल साहित्य, अनुवाद कार्य, संपादन लेख, पटकथा लेखन, रेडियों लेखन, टी0वी0 फिल्म लेखन, टी0वी0 साक्षात्कार और विभिन्न देशों के प्रमुख राजनयिकों के साक्षात्कार आदि को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है।